With Best Complement From

mPpdksfV ds
fcfYMax@Hkou
fuekZ.k ds fy,
i'kqifr lhesUV
lnk iz;ksx djsa

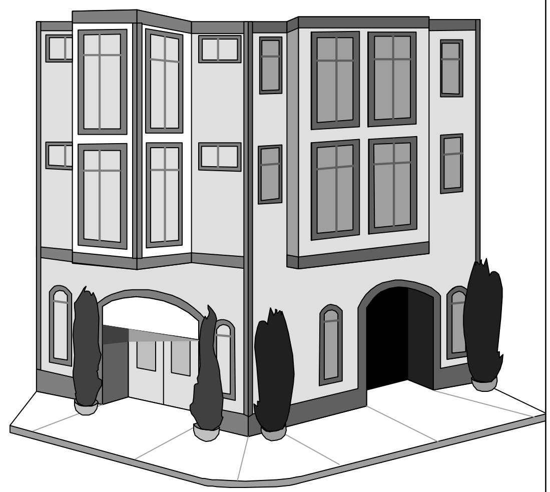

i'kqifr lhesUV

इण्डस्ट्रीयल एरिया, रामनगर, वाराणसी

Standard
Chartered

HomeSaver costs less than even the lowest interest home loan at

7%

Can you believe this?

HomeSaver is a unique home loan that lets you pay off your home loan in 1/2 the time, 1/2 the cost!

Transfer your existing home loan to HomeSaver today!

Choose

HomeSaver

SAS Financial Solutions P. Ltd.

0512-3214722, 3093828

WWW.standardchartered.co.in

On a minimum loan amout of Rs. 4 lakhs.
Terms & conditions apply. All loans at the sole discretion of the bank.

वर्ष : 4, अंक : मई–जून–जूलाई 2004

विश्व
हिन्दी मासिक पत्रिका
स्नेह
समाज

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सहायक संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्रा

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

पत्रव्यवहार का पता :
एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद
मो0: 3155949 फैक्स सं0 : 0532–2655595

सम्पादकीय कार्यालय :
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुरसा, इलाहाबाद
☎(0532)–3155949

पंजीयन संख्या
(R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380
डाक पंजीयन संख्याः
एडी.306 / 2003–05

व्यूरो कार्यालय
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नगर, भुजौली कॉलोनी, देवरिया ☎(05568)225085

मूल्य एक प्रति : 3रुपये
वार्षिक मूल्य : 30.00 रुपये मात्र
विशिष्ट सदस्य : 100.00रुपये मात्र
आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र

turk us fn;k viuk QSlyk lksfu;k ;k vVy

चुनाव में भाजपा के नेताओं ने यह मुद्दा बार बार उठाया कि जनता यह फैसला करेगी कि सोनिया या अटल. जनता ने अपना फैसला सुना दिया. फिर भी हमारे देश के सम्मानित नेता ओछी राजनीति करने से बाज नहीं आते. वे अपनी शर्म, हया बेचकर फिर वही मुद्दे उठाने लगे. भारत जैसे देश में जहॉ स्वतंत्रता के पॉच दशक बीत जाने के बाद भी आम जन को पीने को पानी तक व्यवस्था नहीं है, बिजली की समस्या पूरे देश में बिकड़ाल रुप ध्ाारण किये हुए हैं, किसान कर्ज में डूबे होने के कारण आत्म हत्या करने को मजबूर हैं, दहेज की बलवेदी पर बहूये चढ़ायी जा रही है, गांवो में पहुॅचने तक को सड़क नहीं है, पढ़ने को स्कूल नही है से लेकर देश की समस्याओं (पूर्वोतर राज्य, काश्मीर, लद्दाख, पाकिस्तान, बर्मा व चीन) इत्यादि ऐसे मुद्दे हैं जिनके आगे विदेशी मूल का मुद्दा गौड़ नजर आता है. ऐसे में अपने आपको भारतीय बेटी कहने वाली नेत्रियों को भारत की समस्याओं से कोई मतलब नही हैं. उन्हें विधवा होने का शौक हैं. उन्हें यह नहीं मालूम कि भारतीय संस्कृति में विधवा होने के बाद बहूए अपना सर मुड़ाती है.

जनता ने ओपिनियन एवं एग्जिट पोल को धता बताते हुए अपना फैसला सुना दिया कि हमें फील गुड या विदेशी मूल के मुद्दे से कोई लेना देना नहीं है. हमें विकास चाहिए चुनावी नारे नहीं.

जनता को आज जरुरत है उसकी समस्याओं पर गौर करने की. उसे अगर सरकार खाना नहीं दे सकती है तो कम से कम सड़क, बिजली, पानी, उचित शिक्षा की व्यवस्था तो कर सकती है.

लेकिन जनता के इस फैसले से कांग्रेस को भी इतराने की भूल नही करनी चाहिए. अगर काग्रेंस गठबंधन सरकार भी जनता के मुद्दे को लेकर नहीं चली तो उसे भी अगली बार बहुमत या सत्ता से हाथ धोना पड़ सकता हैं.

जी.के.द्विवेदी
प्रधान संपादक

आईएसओ 9002 एवं आईएसओ 14001 मान्यता प्राप्त संस्था इफको प्रगति पथ पर अग्रसर

* नाइटोजीनस एवं फास्फेटिक उर्वरकों के उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी संस्था के रुप में उभरकर सामने आयी हैं।
* विजिन 2010 के अन्तर्गत रु 15000 करोड़ के टर्नओवर का लक्ष्य हैं।
* ग्रामीण समुदाय की सेवा हेतु इफको टोक्यो जनरल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड की स्थापना कर सामान्य बीमा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है।
* ओमान में संयुक्त क्षेत्र में एक विशाल उर्वरक परियोजना का निर्माण 15 अगस्त 2002 से आरम्भ किया हैं।
* प्राकृतिक आपदाग्रस्त किसान समुदाय की मदद हेतु दस करोड़ रुपये से किसान सेवा निधि की स्थापना।

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

फूलपुर इकाई, पोस्ट–घियानगर, जिला–इलाहाबाद–212404

फोन (0532) 251334, 251250, 251251 (0532) 2609213

फैक्स : (0532) 251332, 251253, ई–मेल–**phulpur@iffco.nic.in Website-www.iffco.nic.in**

विकास का योग – उर्वरक का प्रयोग

आपके विचार स्नेह के साथ

मेरे प्रति आपके स्नेह के लिए आभार

प्रिय महोदय,
प्रणाम
आप सबके स्वस्थ व प्रसन्न रहने की कामना और प्रार्थना है. आपकी सम्मानिक पत्रिका का सिल्वर जुबली अंक संयुक्तांक नवम्बर–दिस. 03 पाया, पाकर खुशी हुई. मेरे प्रति आपके स्नेह के लिए आभार. नए अंक की प्रतीक्षा है.घर/पत्रिका परिवार में सभी को मेरा यथोचित अभिवादन. शुभकामनाओं सहित. आपका

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
एल.आई.यू. आफिस, कोतवाली कैम्पस, फतेहगढ़, 209601

विश्व स्नेह समाज की चाहत, विकसित भारत देश बने।

सेवा में,
प्रधान संपादक, विश्व स्नेह समाज
महोदय,
आज हर आदमी अपने साथ, अपने परिवार–गॉव, जनपद, प्रांत यहॉ तक कि सारे भारतवर्ष को विकासशील से विकसित करने की चेष्टा में लगा हुआ है. इस परिपेक्ष में मैं आपकी तथा बायोवेद शोध एवं प्रसाद केन्द्र इलाहाबाद के निदेशक डॉ. बृजेश कान्त द्विवेदी की भावनाओं को एक साथ दृष्टव्य करने का प्रयास कर रहा हुॅ. धृष्टता क्षमा करते हुए मेरी पंक्तियों को यथा उचित स्थान देने की कृपा करें–

विश्व स्नेह समाज की चाहत,
विकसित भारत देश बने।
बायोवेद प्रयाग की मंशा,
भारत देश महान बने।।
विश्व स्नेह समाज सरीखे,
बायोवेद संस्थान भी है।
गोकुलेश्वर और बृजेश द्विवेदी
प्रतिभा के धनी महान भी है।।
जन जीवन का पूर्ण मनोरथ,
आप दोनों के हाथ में हैं।
ज्ञान की चाभी आप के पास,
विकास बृजेश के हाथ में हैं।।
आप दोनों के उत्कर्षो से,
विश्व स्नेह भरपुर बढ़ेगा।
कृषक खजाना बायोनीमा,
सुप्रभात हर कोई पढ़ेगा।।
विश्व स्नेह समाज की रचना,
मम कविता आप किये प्रकाशित।
डिस्टिंग्यूस सर्विस अवार्ड मुझे दे,
बृजेश कान्त जी किये सुशोभित।।
विश्व स्नेह समाज पत्रिका,
अमृत फल वाली होगी।
बायोवेद के क्रिया–कलाप,
कामधेनु–दूध वाली होगी।।
मूल के बदले केवल ब्याज,
श्रद्धा सुमन के रुप में हैं।
श्रीमान स्वीकार करें,
पुष्प हार के रुप में हैं।।

राजेश कुमार सिंह
बायोवेद शोध फार्म प्रभारी, 103/42, मोतीलाल नेहरु रोड, प्रयाग, इलाहाबाद–211002

वास्तव में विश्व को स्नेह का संदेश दे रहे है

प्रिय महोदय,
आपकी पत्रिका का वर्ष 3 अंक 24, सितम्बर 04 मिला. इलाहाबाद जैसी नगरी, जो हिन्दी को आगे बढ़ाने में सदैव आगे रही है, आपकी पत्रिका के प्रकाशन से वास्तव में धन्य है क्योंकि इसमें आप राजनैतिक, साहित्यिक और अन्य विधाओं को शामिल कर वास्तव में विश्व को स्नेह का संदेश दे रहे हैं. संपादक मंडल को बहुत–बहुत साधुवाद। सादर

भवदीय
महावीर शर्मा,
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, तारापुर परमाणु बिजली घर, टी.ए.पी.पी., जिला–ठाणे–महाराष्ट्र

पत्रकारिता में हुआ, गोकुलेश्वर का नाम आलोकित है आपके, इस धरती पर काम

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी,
आशीर्वाद
विश्व स्नेह समाज के नये पुराने 4 अंक मिले जो आपकी और आपके सहयोगियों के प्रयास की कहानी कह रहे हैं. कुशल सम्पादन के लिए बधाई. हमारे योग्य जो भी सेवा हो, लिखें, परिचय देने के लिए धन्यबाद

पत्रकारिता में हुआ, गोकुलेश्वर का नाम।
आलोकित है आपके, इस धरती पर काम।।
कुसुमलता मिश्रा लगे, सक्षम रचनाकार।
दोनों को मिलता रहे, पग–पग पर सत्कार।।
रीता मिश्रा का लगे, दिव्य कुशल ब्यवहार।
तीनों का हर रहे, स्वस्थ सुखी परिवार।।
जीवन में आगे बढ़े, हे कुमार रजनीश।
करना जनकल्याण ही, कृपा करें जगदीश।।
मधुकर मिश्र भी लगे, दिल में लिए मिठास।
उतना पाता है वहीं, जिसकी जितनी आस।।
सिद्दीकी नवलाख हैं देते नेक सलाह।
और जया शुक्ला हमें, देती है शुभ राह।।
सचमुच लगें प्रमुख हीं, दूबे जी गिरिराज।
कुछ तो है जो आपको, पहनाया है ताज।।

डॉ. स्वामी श्यामानन्द सरस्वती जी
प्रधान सम्पादक, काव्य गंगा, 895,रानीबाग, दिल्ली–110034

प्रिय पाठकों, आपकी पत्रिका कैसी लगी, इसमें क्या सुधार किया जाये आदि विषयों पर अपने विचारों से हमें अवगत कराते रहे, आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूंजी है. **संपादक**

सोनिया मोइन से सोनिया माता तक का सफर

✍ जी.के.द्विवेदी

9 दिसम्बर 1946 को टयूरिन शहर के करीब स्थित ओबसिनों गांव, इटली के मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी सोनिया गॉधी के राजनीतिक और सामाजिक कद को मापना अब आसान नहीं रह गया हैं. देश भर में उनके लिए जान लुटाने को तैयार लाखों समर्थकों ने उन्हें एक ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया हैं, जहॉ बहुत कम ही राजनेता पहुंच पाते हैं. उन्हें अब फिरंगी समझकर हंसी ठिठोली करना, इस देश की समृद्ध परंपरा का ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र का भी अनादर होगा. जब देश के कई राजनीतिक दिग्गज चोट खाए बैठे हैं, तब एक दिग्गज निखर कर सामने खड़ा है. इस दिग्गज के ऊपर के पड़ी धूल को देश की जनता ने हीं साफ किया हैं.

1965 में, 19 वर्षीया सोनिया माइनों की राजीव गॉधी से पहली मुलाकात एक ग्रीक रेस्तरां गर्डेनियां में हुई थी. इसके बाद तो मुलाकातों का सिलसिला चल निकला. इसके बाद शुरु हुआ इटली की एक लड़की का भारतीयकरण. वसंत पंचमी के दिन 25 फरवरी 1968 को 1 सफदरगंज रोड, नई दिल्ली स्थित गांधी परिवार के तत्कालीन निवास पर राजीव और सोनिया का विवाह इंदिरा गॉधी की शादी की गुलाबी सूती साड़ी पहन कर हुई. इस सूती साड़ी का भी अपना एक ऐतिहासिक महत्व

कुर्बानी का अनूठा आर्दश रखा है सोनिया गॉधी ने

सोनिया गॉधी के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने से इनकार कर अंतरराष्ट्रीय मीडिया की उत्सुकता बढ़ा दी है. ब्रिटिश मीडिया कुछ अखबारों ने इसे सोनिया गॉधी के त्याग की कुर्बानी का अनूठा आदर्श कहा है तो कुछ ने इसे एक सध ी हुई नेता का सशक्त राजनीतिक दाव मान रहे है. सभी अखबार इस बात पर एकमत है कि सोनियॉ गॉधी ने रानजनीतिक कुर्बानी की मिसाल कायम कर दुनिया के सामने अनूठा आदर्श रखा है. अमेरिकी मीडिया के अनुसार–सोनिया गॉधी ने प्रधानमंत्री पद स्वीकार करने से इनकार कर अपने विरोधियों को करारा जबाव दिया है. उनका मानना है कि सोनिया गॉधी ने विरोधियों की आवाज बंद कर दी हैं. पाकिस्तानी मीडिया ने इसे राजनीतिक त्याग की सर्वोत्तम मिसाल करार दिया है. मीडिया ने पाकिस्तानी नेताओं को सोनिया गॉधी से प्रेरणा लेने की अपील भी की है. दक्षिण एशिया मामलों की पूर्व अमेरिकी उप–सहायक विदेश मंत्री और जानी–मानी विश्लेषक टेरेसिता स्कैफर ने कहा कि–सोनिया गॉधी ने प्रधानमंत्री की कुर्सी ठुकरा कर अकाट्य तुरुप चला है. इस निर्णय का भविष्य में भारत की राजनीति पर खास असर देखा जाएगा. ऐशे में बुश प्रशासन को इस सरकार से सामजस्य स्थापित करने के लिए रणनीति में बदलाव लाना होगा. जाने माने राजनीतिक विश्लेषक हमीद रफीक कहते है कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर काबिज होने अनिच्छा जताकर सोनिया से भारतमाता की छवि अर्जित कर ली हैं. बहु प्रतिष्ठित, बहु पठित, बहु स्वीकृत आलोचक–विचारक डॉ. नामवर सिंह ने कहा –मेरी अपनी और अपने दुश्मनों की नजर में और देश की जनता की नजर में इस त्याग से सोनिया जी का कद बहुत ऊंचा हो गया है. बीजेपी को उन्होंने निहत्था कर दिया है. मुझे नहीं लगता कि दुनिया के लोकत्रंत में ऐसा कभी हुआ हो. सुपरिचत लेखक व वरिष्ठ स्तम्भकार कुलदीप नैयर ने कहा –बहुत ऊॅचा हो गया है सोनिया का कद. ❍

राहुल गॉधी के जन्म दिवस पर विशेष

19 जून 1970 को जन्में तथा दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से बी.ए. आनर्स (इतिहास) तथा विदेश से एमसीए किया
शिक्षा पूरी करने के बाद ब्रिटेन में एक साल तक शेयर दलाल के रुप में काम किया. अपनी सॉफ्ट वेयर कंपनी खोलने के इरादे से भारत की ओर मुख किया.
अभी तक अविवाहित राहुल गॉधी ने अभी हॉल ही में अपनी गर्ल फ्रेंड जुनैता के साथ केरल में छुट्टियां मनाई. 1999 के विश्व कप क्रिकेट मैच के दौरान भी कैमरे से बच नहीं सके.
वे देखने में अपने पिता पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 राजीव गॉधी जैसे आकर्षक व शर्मीले स्वभाव के धनी राहुल गॉधी की रुचि कम्प्यूटर और कारों के दीवानें हैं. सफदरगंज फ्लाइंग क्लब के सदस्य भी हैं. वे पश्चिमी संगीत सुनते हैं, फोटोग्राफी, मार्शल आर्ट और शूटिंग में भी पारंगत श्री की राजनीतिक यात्रा अपनी मां सोनिया गॉधी के साथ उत्तर प्रदेश, केरल और राजस्थान के चुनावों में साथ–साथ रहने से शुरु हुई. और अभी हॉल ही में अपनी परिवार की विरासत अपने चाचा संजय गॉधी व पिता स्व0 राजीव गॉधी की परम्परागत सीट अमेठी से चुनाव जीत कर अपनी राजनीतिक यात्रा को एक नया आयाम दिया हैं.संभावना है कि आने वाले वर्षो में देश के प्रधानमंत्री की कुर्सी के प्रबल दावेदार साबित हों.
भगवान उन्हें लम्बी आयु प्रदान करें जिससे बहुत दिनों से शमसान में पैर लटके प्रधानमंत्रीयों से मुक्ति दिलायें और युवाओं को साथ लेकर देश को आगे बढ़ाने में काफी सहायक सिद्ध हों.

है. इस साड़ी में इस्तेमाल सूत को देश प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु ने जेल में रहते हुए काटा था. सोनिया शुरु–शुरु में भारतीय वस्त्रों और खान–पान से दूर भागती थी, लेकिन इंदिरा गांधी ने उन्हें धीरे–धीरे भारतीय पंरपराओं में ढाला. कई बार गांधी परिवार की भागमभाग से सोनिया और राजीव गांधी भी बचते रहे. दोंनो में किसी की रुचि राजनीति में नहीं थी. सोनिया ने 1980 में अपने देवर संजय गांधी के निधन के बाद 1984 में अपनी मां समान सास को भी दुनिया से जाते देखा. वह तब बहुत घबराई थी, लेकिन राजीव गॉधी ने उन्हें मना लिया था. यह वह समय था, जब सोनिया ने भारत की नागरिकता स्वीकारी. कई लोग यह पूछते हैं कि सोनिया ने इस देश की नागरिकता के लिए 16 वर्षो तक इंतजार क्यों किया? अगर उनमें राजनीतिक महत्वाकांक्षा रहती, तो वह भारत पहुंचते ही नागरिकता लेकर राजनीति का क ख ग पढ़ना शुरू कर देती. जब वह इस देश की नागरिक नहीं थी तब भी उन्होंने उस घर के बच्चों को संभाला, जो घर देश को संभाल रहा था. क्या यह कम है? बहरहाल, राजीव ने 1989 तक देश संभाला और सोनिया ने घर. उनकी आंशका के अनुसार ही 21 मई 1991 को राजीव गांधी भी नहीं रहे. सोनिया अगर चाहती, तो तभी उन्हें प्रधानमंत्री का पद सहर्ष मिल जाता. वह भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण संक्रमणकाल था. मंडल के बाद कमंडल की राजनीति चल पड़ी थी. 1996 का चुनाव कांग्रेस हार गई, तो कांग्रेस में नेतृत्व का संकट गहरा गया. कांग्रेस आकर्षण खोने लगी. यही वह काल था, जब कांग्रेस पार्टी व मित्रों के भारी दबाव के कारण गांधी परिवार फिर सक्रिय हुआ. वर्ष 1997 मं सोनिया ने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की और कुछ ही दिनों में कांग्रेस की कमान उनके हाथों में आ गई. ऐनी बेसेंट और नेल्ली सेनगुप्ता के बाद वह कांग्रेस अध्यक्ष बनने वाली विदेशी मूल की तीसरी महिला हैं. सोनिया ने कांग्रेस को फिर से खड़ा किया. वह 15 राज्यों में कांग्रेस सरकारों को गद्दी दिलवा चुकी थीं. लोकसभा चुनावों में उन्हें सफलता नहीं मिल पा रही थी, वह कसर भी 2004 के चुनाव में पूरी हो गई.

लेक्चरर से प्रधानमंत्री तक का सफर

डॉ. मनमोहन सिंह

19 मई 2004 को दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में, भारत के लोकतत्र के इतिहास में पहलीबार अल्पसंख्यक समुदाय के नेता मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया. अर्थशास्त्र के लेक्चरर से लेकर एशियन डेवलपमेंट बैंक से जुड़े रहे श्री मनमोहन सिंह में अधिकारी के बजाय एक शिक्षक जैसी सहजता है. तमाम उच्च पदों पर रहते हुए भी उन पर कभी कोई आरोप नहीं लगा. राजनीति में उनके उजली छबि के लोग कम ही नजर आते हैं. पिछली राजग सरकार जिस उदारीकरण के बदले फील गुड करा रही थी वह मनमोहन सिंह की ही देन है. वह अंतमुर्खी स्वभाव के हैं. इंदिरा गॉधी, राजीव गॉधी, चंद्रशेखर और नरसिंह राव जैसे चार पूर्व प्रधानमंत्रियों के साथ सीध् ा तौर पर जुड़े रहे मनमोहन सिंह की छवि आर्थिक मामलों में कड़े रुख के बावजूद एक उदारवादी नेता की है. इसलिए वह सोनियॉ गॉधी की भी पहली पंसद हैं.

26 सितम्बर 1932 को गह, पश्चिम पंजाब (अब पाकिस्तान में) में जन्में पिता श्री गुरमुख सिंह व मां श्रीमती अमृत कौर के पुत्र श्री मनमोहन सिंह का विवाह 14 सितम्बर 1958 को गुरशरण कौर के साथ हुआ. उनकी तीन बेटियां है. आपकी शिक्षा बी.ए. (ऑनर्स), 1952 तथा एम.ए. (ऑनर्स) 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय, चंढ़ीगढ़ में हुई. आप बी.ए. और एम.ए. में दोनों में विश्वविद्यालय के टॉपर छात्र रहे. सेंट जोंस कॉलेज कैब्रिज में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राइट प्राइज, 1955 व 1957 में प्राप्त किये. आपको 1957 में रेनबरी स्कॉलर, कैब्रिज यूनिवर्सिटी से प्राप्त हुई. आपने डी. फिल, ऑक्सफोड विश्वविद्यालय व डि लिट, हॉनरिस कासा से किया. आप प्रोफसर (सीनियर लेक्चरर, अर्थशास्त्र) 1957–59, रीडर 1959–63, प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ़, 1963–65, प्रोफेसर, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स 1969–71, मानद प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय 1976 और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स 1996 तक रहें.

आपने इंडिया एक्सपोर्ट ऐंड प्रॉसपेक्टस फॉर सेल्फ ससटेंड ग्रोथ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, 1964 में किताबों को लिखा. आपके अनेक लेख अनेक आर्थिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं.

आपको एड्म स्मिथ पुरस्कार, कैब्रिज यूनिवर्सिटी 1956, पद्म विभूषण, 1987, यूरोमनी अवॉर्ड, वर्ष के वित्त मंत्री–1993, एशिया मनि अवार्ड, वर्ष के वित्त मंत्री एशिया, 1993–94, आदि पुरस्कोरों से नवाजे गए. प्राप्त हुए.

आपने 1966 में आर्थिक मामलों के अधिकारी, 1966–69 में अंकटाड के वित्त व व्यापार विभाग प्रमुख, 1972–74 में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा सुधार पर भारत के लिए आईएमफ की 20 सदस्यीय समिति के उप प्रमुख, 1977–79 में एड इंडिया कांसोटोरियम सम्मेलन के प्रतिनिधि ा, 1980–82 में भारत–रुस संयुक्त योजना समूह, 1993 में कॉमनवेल्थ हेड्स ऑफ गवमेंट मीटिंग, सायप्रस के रुप मे अंतरराष्ट्रीय प्रभार भी संभाला.

आपको आपके योगदान को देखते हुए 1971–72 में विदेश व्यापार मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार, 1972–76 में वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार, 1976–80 तक, निदेशक, रिजर्व बैंक, निदेशक, औद्योगिक विकास बैंक, अलरनेट गवर्नर, बोर्ड ऑफ गवर्नर, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, आईबीआरडी, नवम्बर 1976–अप्रैल 1980 में वित्त मंत्रालय

में सचिव, सदस्य वित्त, परमाणु उर्जा आयोग, सदस्य वित्त, अंतरिक्ष आयोग, अप्रैल 1980–83 में चेयरमैंन, भारत–जापान संयुक्त अध्ययन समिति, 16 सितम्बर 1982–14 जनवरी 1985 तक गवर्नर भारतीय रिजर्व बैंक, 1982–85, भारत में अलरनेट गवर्नर, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, 1983–84 प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य, 1985 में भारतीय आर्थिक संगठन के अध्यक्ष,15 जनवरी 1985–31 जुलाई 1987, योजना आयोग के उपाध्यक्ष, 1 अगस्त 87–10 नवंबर 90, महासचिव व कमिश्नर, साऊथ कमीशन, जिनेवा, 10 दिसम्बर 90–14 मार्च 91 प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार, 15 मार्च 1991–20 जून 1991 में अध्यक्ष, यूजीसी, 21 जून 1991–15 मई 1996 तक केंद्रीय वित्त मंत्री, अक्टूबर 1991 में असम से राज्यसभा के लिए चुने गए, जून 1995 में राज्यसभा के लिए दोबारा चुने गए, 1 अगस्त 1996 से 4 दिसम्बर 1997 तक, अध्यक्ष, वाणिज्य मामलों की संसद की स्थायी समिति, 21 मार्च 1998 में राज्यसभा में विपक्ष के नेता, 5 जून 1998 को सदस्य, वित्त समिति, 13 अगस्त 1998 से सदस्य, विधायी समिति, अगस्त 1998–2001 सदस्य, विशेषाधिकार समिति, 2000 से सदस्य, कार्यकारी समिति, भारतीय सांसदों का समूह, जून 2001 में राज्यसभा के लिए पुनः निर्वाचित हुए. तथा 19 मई 2004 को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र देश के प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये.

मनमोहन सिंह मंत्रालय

कैबिनेट मंत्री

नाम	पार्टी	विभाग
प्रणव मुखर्जी	कांग्रेस	रक्षा
अर्जुन सिंह	कांग्रेस	मानव संसाधन
शरद पवार	एनसीपी	खाद्य–कृषि
लालू प्रसाद यादव	राजद	रेल
शिवराज पाटिल	कांग्रेस	गृह
रामविलास पासवान	लोजपा	रसायन–उर्वरक
गुलाब नबी आजाद	कांग्रेस	संसदीय कार्य, शहरी विकास
जयपाल रेड्डी	कांग्रेस	सूचना–प्रसारण
शीशराम ओला	कांग्रेस	श्रम–रोजगार
पी. चिदंबरम्	कांग्रेस	वित्त
महावीर प्रसाद	कांग्रेस	लघु–उद्योग
पी.आर.कींदया	कांग्रेस	आदिवासी मामलात, पूर्वोत्तर विकास
टी.आर.बालू	डीएमके	भूतल परिवहन एवं राजमार्ग, जहाजरानी
शंकर सिंह बघेला	कांग्रेस	कपड़ा
नटवर सिंह	कांग्रेस	विदेश
कमलनाथ	कांग्रेस	वाणिज्य–उद्योग
एच.आर.भारद्वाज	कांग्रेस	कानून–न्याय
पी.एम.सईद	कांग्रेस	ऊर्जा
रघुवंश प्रसाद सिंह	राजद	ग्रामीण विकास
प्रियरंजन दासमुंशी	कांग्रेस	जल संसाधन
मणिशंकर अययर	कांग्रेस	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस, पंचायती राज
सुनील दत्त	कांग्रेस	युवा मामले–खेल
मीरा कुमार	कांग्रेस	सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता
के.चन्द्रशेखर राव	टीआरएस	बिना विभाग
शिबू सोरेन	झामुमो	कोयला खनन एवं खनिज
ए.राजा	डीएमके	पर्यावरण–वन
दयानिधि मारन	डीएमके	संचार–सूचना प्रौद्योगिकी
ए.रामदास	पीएमके	स्वास्थ्य

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

संतोष मोहन देव	कांग्रेस	भारी उद्योग
जगदीश टाइटलर	कांग्रेस	प्रवासी मामलात
ऑस्कर फर्नाडिस	कांग्रेस	सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन
रेणुका चौधरी	कांग्रेस	पर्यटन
सुबोधकांत सहाय	कांग्रेस	खाद्य प्रसंस्करण
कपिल सिब्बल	कांग्रेस	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, समुद्र विकास
विलास मुत्तेमवार	कांग्रेस	गैर पारंपरिक ऊर्जा
कुमारी शैलजा	कांग्रेस	शहरी रोजगार
प्रफुल्ल पटेल	एनसीपी	नागरिक उड्डयन
प्रेमचंद्र गुप्ता	राजद	कंपनी मामलात

राज्य मंत्री

ई. अहमद	आईयूएमएल	विदेश
सुरेश पचौरी	कांग्रेस	संसदीय कार्य
बी.के.हांडिक	कांग्रेस	रक्षा
पी.लक्ष्मी	कांग्रेस	स्वास्थ्य
डी.एन.राव	कांग्रेस	कोयला
शकील अहमद	कांग्रेस	संचार व आईटी
राव इंदरजीत सिंह	कांग्रेस	विदेश
नारायण भाई रठुआ	कांग्रेस	रेलवे
के.रहमान खान	कांग्रेस	रसायन–उर्वरक
के.एच.मुनियप्पा	कांग्रेस	सड़क परिवहन
एम.वी.राजशेखरन	कांग्रेस	योजना
कांतिलाल भूरिया	कांग्रेस	खाद्य–कृषि
माणिकराव गावित	कांग्रेस	गृह
श्री प्रकाश जायसवाल	कांग्रेस	गृह
पृथ्वीराज चौहान	कांग्रेस	पीएमओ
तस्लीमुद्दीन	राजद	कृषि, खाद्य व नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले व सार्वजनिक वितरण प्रणाली
सूर्यकांता पाटिल	एनसीपी	ग्रामीण विकास
एम.ए.ए.फातमी	राजद	मानव संसाधान
ए.नरेन्द्र	टीआरएस	ग्रामीण विकास
आर.वालु	पीएमके	रेलवे
एस.एस.पणानिमणिक्कम	डीएमके	वित्त
एस.रघुपति	डीएमके	गृह
एस.वेंकटपति	डीएमके	कानून
एस.लक्ष्मी जगदीशन	डीएमके	सामाजिक न्याय
ई.वी.के.इलांगोवन	कांग्रेस	वाणिज्य एवं उद्योग
कांति सिंह	राजद	मानव संसाधन
नमोनारायण मीणा	कांग्रेस	पर्यावरण–वन
जयप्रकाश नारायण	राजद	जल संसाधन
अखिलेश सिंह	राजद	खाद्य कृषि

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

पूर्व कथा.....अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है. अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है. अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है. सावन को अनु का पता ढूढते–ढूढते मोना नामकी एक लड़की मिलती है. दो दिन की मुलाकात में ही दोनों के बीच प्रेम पनप जाता है. सावन, अनिल, अनु और मोना कोर्ट मैरिज करते है. सावन, अनु के घर जाता है उसकी मम्मी उसे जान से मारने को कहती है लेकिन सावन की चतुराई से वे शांत हो जाती है.सावन प्रेम विवाह पर एक सम्मेलन आयोजित करवाता है. सावन सम्मेलन में अनिल व अनू के मम्मी–पापा से अपने लड़का व लड़की की पसंद के लड़के से शादी करने का वचन लेता है. अनिल के पापा अनु को देखकर बहू का आर्शिवाद देते हैं. सावन अपने घर जाता है वहॉ उसकी शादी को लेकर उसके परिवार वाले कहते हैं. अनिल और अनु की शादी का बिना दहेज के रास्ता क्लीयर न हो पाने के कारण सावन उदास होकर पार्क में बैठा होता है. वहीं मोना आती है और सावन की उदासी कारण पूछती है. सावन बताता है. मोना अनिल की मम्मी से मिलती है और अधिक दहेज लेकर आयी बहुए द्वारा सांस की दुर्दशा को बताती है. अनिल की मम्मी मोना की कहॉनियों से द्रवित हो जाती है और अनिल की शादी अच्छी बहू देखकर बिना दहेज करने को तैयार हो जाती है. अनु के घर से उसके पापा अनिल के घर जाते हैं और शादी सामाजिक तौर तरीके तय होती है. उधर सावन और मोना की नौकरी एक ही कंपनी में लग जाती है **और अब आगे.....**

अंतिम किश्त

अनु और अनिल की शादी की तैयारियॉ प्रारम्भ हो जाती है. सावन के मम्मी–पापा व परिवार के लिए दोनों तरफ से निमत्रंण जाता है. उन्हें शादी में लाने के लिए अनु और अनिल की तरफ से एक–एक गाड़िया व अनिल खुद जाता है. और वह उन लोगों को लाता भी है. मोना को अनु व उसके पापा की तरफ से सपरिवार निमत्रंण अनु की घनिष्ठ सहेली बताकर जाता है. और उन्हें भी शादी में शरीक होने का विशेश दबाव डाला जाता है. इस दबाव में डॉ. रेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है

उन्हें सावन और मोना की दोस्ती की भनक पार्क में एक साथ देखकर लग चुकी होती है.

शादी में डॉ0 रेखा, अशोक शुक्ला, मि. व मिसेज अजय अग्निहोत्री भी शरीक होते है. सभी लोग अनिल को बधाई देने की बजाय सावन को ही बधाई देते है. सावन, मोना, बबली, शालू व डॉ0 रेखा खूब डांस करते है.

“सावन भइया, आपने अनु की डोली तो आज अनिल के दरवाजे पहुँचा

दी. हम लोगों ने डांस की रिर्हसल भीा कर लि

या. अब ये तो बताइये कि आपकी डोली कब तक उठेगी?”

“देखो बबली, मेरी डोली अब उठे या न उठे. इसका मुझे कोई गम नहीं है? मेरा जो मुख्य लक्ष्य था वह आज परिपूर्ण हो गया.”

“नहीं भइया, आप भी इसी वर्ष शादी कर ही डालें. चाहे जैसे भी हो..”

“बबली, वक्त का इन्तजार करो.”

रिसेप्सन के समय सभी लोग इकट्ठे होते है. सावन और अनिल गले मिलते है. अनु सावन का सबसे पहले पैर छूती है. सावन उसे उठाकर सीने से लगा लेता है. अनु की ऑखों से आज खुशी की अश्रुध ाारा बह निकलती है. सावन उसे पोछता है”

“अरे पगली! अब क्यों रोती है?”

“भइया, यह खुशी के ऑसू आपकी ही देन है. अब आप भी आज ही एलान कर दीजिए मोना बहन का. ताकि इस खुशी में चार चॉद लग जाए.”

सभी लोग इस धर्म भाई–बहन के अटूट, स्नेहिल प्यार को देखकर भाव विहवल हो जाते है.

सावन के मम्मी–पापा व परिवार के लोग सावन के प्रति सभी लोगों का स्नेह, उसकी प्रशंसा के शब्दों को सुनते–सुनते गर्वानवित महसूस करते है. खासकर उसके पापा को अपने बेटे की इस प्रशंसा पर फक्र था.

कार्यक्रम प्रारम्भ होता है. इसी बीच अशोक शुक्ला, मि. मिसेज अग्निहोत्री व डॉ. रेखा सावन के मम्मी–पापा व पूरे परिवार वालों को सावन की मोना से शादी करने के लिए तैयार होने को राजी कर लेते हैं. मोना के मम्मी–पापा तो सावन से पहले ही प्रभावित होकर दामाद के रूप में सोचते रहते है. वे लोग तुरंत हामी भर देते है.

अशोक शुक्ला मंच पर आते है–

“मेरे प्यारे बेटे, अनिल, बेटी अनु, प्यारे दोस्तों एवं उपस्थित सज्जनों. जैसाकि आप लोगों को अवगत है

कि आज हमलोग अनिल के रिसेप्सन में शरीक होने आए है. लेकिन आज का रिसेप्सन लाने में सावन बेटे की जो भूमिका रही है उसे नकारा नहीं जा सकता. आज इतनी कम उम्र में इस लड़के ने सिद्ध कर दिया कि कोई भी कार्य मुश्किल नही होता बशर्ते उसे करने वाले हों. बहुत ही रहस्यमय बात जिसे खोलने की तारिख आज ही थी. सावन की योजनानुसार, वह यह है कि जिस शादी के रिसेप्शन में हम लोग शरीक हुए है उस शादी को कोर्ट से अनुमति आज से दो वर्ष पूर्व ही मिल चुकी है.”

सभी आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगते है. उन्हें समझ में नही आता कि वे क्या कह रहे है.

लेकिन सावन का निश्चय था कि इस शादी को शादी तभी माना जाएगा जब अनु और अनिल के घर वाले इस शादी को शादी तभी माना जाएगा जब अनु और अनिल के घर वाले इसे परम्परागत तरीके से करेंगे. वरना कोर्ट का कागज फाड़ कर फेंक दिया जायेगा और अनु एवं अनिल सिर्फ दोस्त रह जायेगें. दूसरी महत्वपूर्ण सूचना जो मैं देने जा रहा हूँ वह और ही विस्मरणीय शुभ समाचार है. वह यह है कि मेरे देश की एक अभूतपूर्व, प्रखर बुद्धि के बालक, युवाओं के लिए मिसाल, मेरे प्रिय सावन की शादी मोना बेटी से तय हो गयी है. जो बहुत जल्द दोनों परिवारों के बातचीत के बाद सम्पन्न होगी.

सभी लोग आपस में बाते करते है–ऐसी कोई भनक भी नहीं थीा, अचानक ऐसा कैसे और कब हो गया. थोड़ी सी बाते कम होने पर–आपलोगों में जो शंकाए है उसका निवारण मैं खुद कर देता हूँ. सावन और मोना आज से नहीं बल्कि चार–पॉच वर्षो से एक दूसरे को जानते है और प्यार भी करते है.

फिर एक बार लोग बातें करने लगते है. इतने लम्बें समय से प्यार करते है और दोनों परिवारों व अन्य किसी को खबर तो क्या भनक भी नहीं. इन्होंने वह सच्चा प्यार किया है जैसा प्यार को होना चाहिए. ये दोनों प्यार को पाने की चाहत में ही अपने को आगे बढ़ाया. एक दूसरे का सहयोग किया, जमकर मेहनत किए और और आज दोनों सर्विस भी कर रहे है और वह भी एक ही आफिस में सीनियर व जूनियर के पद पर. इन दोनों ने प्यार तो किया पर प्यार में समय बर्बाद नहीं किया. आजकल के युवाओं की तरह शो बाजी नहीं किया बल्कि इनकी सीमित मुलाकातों में अपने भविष्य की योजनाएं ही बनती थीं. इन्होंने पहले पढ़ाई, फिर प्यार होगा को दृढ़ता से पालन किया. और आज ये प्यार की बदौलत एक दूसरे के मार्गदर्शन द्वारा ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति किये हुए है. आज मैं अपने प्यारे दोस्तों, खासकर हम उम्र साथियों से यह दरख्वास्त करूँगा कि अगर उनके लड़के/लड़की किसी को प्यार करते है तो एक बार स्वयं परख ले. तब फिर अपना निर्णय उनके विरूद्ध लें. प्यार के नाम को कुद मनचलों/मनचलियें ने बर्बाद कर दिया है. लेकिन यह प्रत्यक्ष उदाहरण देखें और सोंचे कि जहॉ मनचलें हैं वहीं सावन और मोना भी आज ही के जमाने के है. जो प्यार के बदौलत आज के बेरोजगारी के इस भयंकर तांडव में भी बिना अपने गार्जियन की सहायता, शोर्ष सिफारिस के

कांटो को चूनकर भी

0रजनीश तिवारी 'राज'

कांटो को चूनकर भी; उनके कूचे पे आए है
सन्नाटे में घिरा हूँ फिर भी आस लगाए हैं।
राहों में मिले हैं दर्द फिर भी दिल लगाये है
जख्म सहकर भी उनके कूचे में आए हैं।
दर्द सीने में, आंखों में आंसू समाएं है
साथ उनके गए थे; पर अकेले आए हैं।
कई जख्म खाकर भी किसी तरह मुस्कराए हैं
सीने से चाहत उसकी फिर भी लगाए हैं
एक–2 गम के आग में अपने को जलाए हैं
एक तूफान से अकेले लड़कर निकल आए हैं
ईश्वर का सहारा था ना डूबे, ना मरे, हारकर
भी उसके सामने आए हैं
साथ देने का वादा करके भी
तन्हा छोड़कर वो आए हैं
कांटो पे चलकर भी तेरे कूचे पर आए हैं

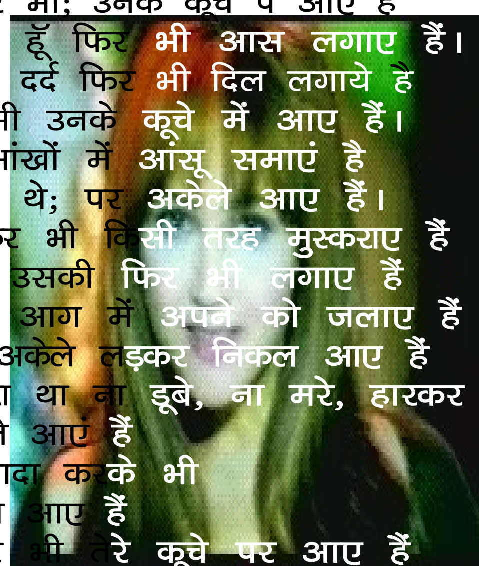

'राज'

एक अच्छे पद को प्राप्त कर चुके है. मैं सावन के मम्मी–पापा को धन्यबाद दूँगा कि उन्होंने सावन जैसे बेटे को जन्म दिया है और इनके प्यार को तुरंत स्वीकार कर लिया, जबकि उन्हें लाखों बिन मॉगे दहेज में मिल रहे थे. उनके पास एक से एक रिश्ते आ रहे है. तमाम लोग इनही हर मांगो को मानकर शादी करने को तैयार है. ऐसे में भी इन लोगों ने शादी के लिए दहेज का नाम तक नहीं लिया. मोना के मम्मी पापा भी काबिले तारीफ हैं जो इस रिश्ते को तुरंत परखकर सहर्ष स्वीकार कर लिये. मैं ऐसे शुभ अवसर पर सावन के पापा सम्माननीय श्री एस.पी. तिवारी जी से आग्रह करूँगा कि वे अपने लड़के के बारे में दो शब्द कहे–

अशोक शुक्ला जी, डी.एन.सिहं जी, एस.एन.सिंह जी, डॉ. रेखा व उपस्थित सज्जनों! सावन बचपन से ही होनहार रहा है. बचपन में मैंने उसे हॉस्टल में डाल दिया. हमें कभी भी कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली. जहॉ भी रहा सूरज सा चमकता रहा और दूसरों को रोशनी देता रहा. मैं तो उसे केवल पैसे भेजा करता था. उसे बचपन से आजतक छात्रावृत्ति मिलती रही. मैंने कभी यह सोचने की जरूरत ही नहीं महसूस किया कि वह क्या कर रहा है व क्या नहीं. कौन सा कोर्स करना है, कौन नहीं? बस मैंने इतना ही किया कि उसे घर के लफड़े में नहीं पड़ने दिया. घर पर अगर कोई समस्या आती थी तो मैं उसे खबर नहीं भेजता. मैं उेस डिस्टर्ब नही होने देना चाहता था. वह घर भी कम ही आता था. अगर आता भी तो दो–चार दिन के लिए. कुछ लोगों ने कहा– आपका लड़का दिनभर घूमता रहता है, उसकी जानकारी तो लेते रहिए. लेकिन मुझे अपने बेटे पर पूर्ण विश्वास था. उसे, इतनी उम्र में भी पूरे गांव के लोग तो दूर अस्सी प्रतिशत रिश्तेदार ही नहीं देखे होगे.

इसके बाद डॉ0 रेखा, अनु, अनिल, मिसेज अजय अग्निहोत्री व उपस्थित जनसमुदाय के आग्रह पर एक गाना सावन और मोना गाते है–

आज पूरे हुए अरमान,
आज दूल्हा बना मेरा यार
मगन भयो नाचो जी......
मेरी बहिनी बनी आज दुल्हन
और यारा बना है दिलदार
मगर भयों नाचों जी....
आज हुए दो सच्चे प्रेमियों का मिलन
आज के दिन को हम रखेंगे याद
मगन भयों नाचो जी....
आज पूरा हुआ हमारे दिल का पैगाम
मगन भयो नाचो जी....

गाने गाते हुए अनिल, अनु, सावन, मोना व सभी उपस्थित लोग सामूहिक डांस करते है. वहीं मोना सावन को और सावन मोना को माला पहनाते है.

मोना–"आज मेरे दिल का पैगाम पूरा हो गया."

मेरे प्रिय स्नेहिल पाठकों

आपका यह चहेता धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' आज अपनी अंतिम कड़ी के साथ समाप्त हो रहा है. यह उपन्यास लगातार 19 अंको में प्रकाशित हुआ. जिसमें हमें अब तक कुल 1500 पत्र प्राप्त हुए. जिसमें लगभग प्रत्येक आयु वर्ग के लोग शामिल है. यह हमें एक सुखद अनुभूति करा गया. अपने सम्मानित पाठकों की मांग पर हम इसे शीघ्र ही एक किताब के रुप में प्रकाशित करने जा रहे है. आशा है आपका स्नेह हमें अवश्य मिलेगा. **लेखक**

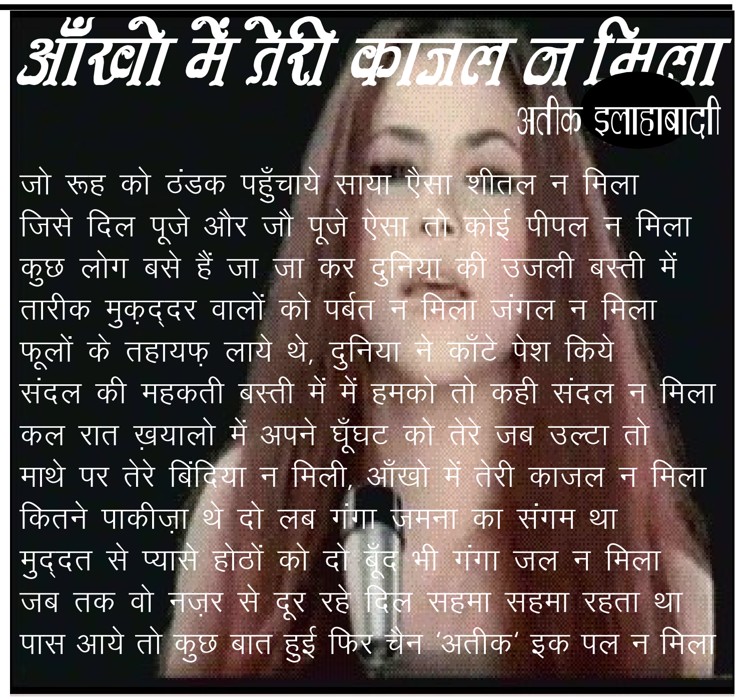

आँखो में तेरी काजल न मिला

अतीक इलाहाबादी

जो रूह को ठंडक पहुँचाये साया ऐसा शीतल न मिला
जिसे दिल पूजे और जो पूजे ऐसा तो कोई पीपल न मिला
कुछ लोग बसे हैं जा जा कर दुनिया की उजली बस्ती में
तारीक मुक़द्दर वालों को पर्बत न मिला जंगल न मिला
फूलों के तहायफ़ लाये थे, दुनिया ने कॉटे पेश किये
संदल की महकती बस्ती में में हमको तो कही संदल न मिला
कल रात ख़यालो में अपने घूँघट को तेरे जब उल्टा तो
माथे पर तेरे बिंदिया न मिली, आँखो में तेरी काजल न मिला
कितने पाकीज़ा थे दो लब गंगा जमना का संगम था
मुद्दत से प्यासे होठों को दो बूँद भी गंगा जल न मिला
जब तक वो नज़र से दूर रहे दिल सहमा सहमा रहता था
पास आये तो कुछ बात हुई फिर चैन 'अतीक' इक पल न मिला

द हंगामा इंडिया

एक कश सिगरेट! ने कराया तलाक

मेरठ.दिलशाद अहमद के साहिबजादे नवेद का रिश्ता एक मौलाना के माध्यम से शाइस्ता से तय हुआ. दिलशाद अहमद का अच्छा खासा कारोबार है जबकि शाइस्ता के वालिद हिसामुद्दीन भी अच्छे रुतबे वाले शख्स हैं. वर रिश्ता पक्का होने के बाद धूमधाम से बारात चढ़ी. नवेद दूल्हा बना और शाइस्ता दुल्हन. एक नई जिंदंगी का खुशनुमापल. नए सफर और नयी मंजिल की तलाश. किसी को क्या पता था कि शादी की खुशियां केवल कुछ ही पलों की हैं. जिस मिलन के लिए अरमान मचलते हैं, उससे पहले ही बखेड़ा खड़ा हो जाएगा. बाराती बताते हैं कि शादी के वक्त तो किसी को गुमान भी नहीं था कि यह शादी केवल एक रात की ही साबित होगी. रिश्ता कराने वाले मौलाना ने ही दोनों दिलों को जोड़ने की रस्म कराई. निकाह पढ़ाया गया. कुबूल है कुबूल है की सदाओं के साथ मुबारकबाद का सिलसिला शुरू हुआ जो देर तक चला. दुल्हन विदा होकर ससुराल आई. अगले दिन रस्मों के मुताबिक दावत–ए–वलीमा होना था. इसके लिए तमाम नाते रिश्तेदारों और मित्रों को कार्ड तक्सीम किए गए. किसी को गुमान भी नहीं था कि यह दावत नहीं होगी. लोग दिल्ली रोड स्थित एक लॉज पर पहुंचे तो वहां दावत–ए–वलीमा जैसा माहौल हीं नही था.कार्ड लेकर वहां पहुंचे लोग हैरत में पड़ गए. तभी वर पक्ष के कुछ लोग आए और उन्होंने कहा कि किसी कारण से वलीमा कैंसिल कर दिया गया है. मामला निकला तो लोगों ने दांतो तले उंगली दबा ली.

हुआ यह कि दुल्हन शाइस्ता को सिगरेट पीने का शौक है.परिवार हाईफाई है.शाइस्ता माडर्न कल्चर में पली है. उसका परिवार भी सिगरेट पीने को बुरा नहीं मानता. वह इसे नए जमाने से जोड़कर देखता है. बारातियों, मौलाना और वर पक्ष के लोगों के मुताबिक दुल्हन जब विदा होकर आई तो उसको देखने महिलाओं का तांता लग गया. इस पूरे तामझाम से दुल्हन का मूड उखड़ गया. उसको सिगरेट की तलब लगी. उसने अपने ननद से पूछा बाथरूम कहां है? वह बाथरुम गई और अपने साथ पर्स भी ले गई. ननद गुलनिशां और अन्य महिलाओं ने कहा भी पर्स लेजाकर क्या करोगी? लेकिन वह पर्स लेकर बाथरूम में चली गई. थोडी देर में सिगरेट की महक और धुंआ उठने पर नवेद के परिवार में हड़कंप मच गया. दुल्हन सिगरेट पी रही है, यह खबर रुसवाई का सबब बन गई. दुल्हन ने बिना किसी लाग लपेट के सिगरेट पीने की बात को कुबूल किया. फौरन लड़की के भाई को बुलाया गया. पिता भी आए. परिवारीजनों की अदालत लगी. बात नहीं बनी. आखिरकार 40 हजार के मेहर में से आधी राशि देकर नवेद ने शाइस्ता को तलाक–तलाक–तलाक कह दिया. दोनों पक्षों में लिखित में समझौता हुआ. दहेज का सामान वापस हो गया. दुल्हन वापस चली गई. वर पक्ष का कहना है कि उनकों धोखे में रख गया. शादी से पहले बताया हीं नहीं गया कि लड़की को सिगरेट पीने की लत है. मौलाना ने भी इस बात को स्वीकार किया कि सिगरेट पीने की लत ही तलाक का कारण बनी. (घटना वास्तविक है केवल पात्रों के नाम समाज हित में बदल दिये गये है.)

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

मि0 कमलेश कुमार,
नन्दनी बुक सेन्टर बाई का बाग, इलाहाबाद

पापुलर बुक डिपो,
इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

लक्ष्मी बुक हाउस
सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

सरदार बुक हाउस,
बस स्टैंण्ड सलेमपुर, देवरिया
फोनः 220155, मो. 9415320148

आलोक एजुकेशन बुक सेन्टर
भलुवनी, देवरिया, उ.प्र.

लूट का अड्डा बना है देवरिया का सेवाश्रम अस्पताल

पैसा देकर अगर आप मरना चाहते हो तो सम्पर्क करें

कु0 पुष्पांजली दुबे, ब्यूरो देवरिया

देवरिया जिले के मशहूर चिकित्सक जो पहले सिविल लाईन्स देवरिया में अपना एक छोटा सा क्लीनिक चलाते थे, आज अपने निज भवन, सीसी रोड, निकट महिला डिग्री कॉलेज, देवरिया के पास सेवाश्रम अस्पताल के नाम से चला रहे है. पेशे व चेहरे से बेहद भोले दिखने वाले डॉ. चन्द्रभान मिश्रा, एम.डी. मुम्बई,कन्सल्टिंग फिजीशियन, भूतपूर्व लेक्चरर, जी.एस.मेडिकल कॉलेज, के.ई.एम. अस्पताल, मुम्बई जो अभी कुछ दिनों पूर्व तक एक साधारण पूरानी सी स्कूटर से चला करते थे आज चार पहिया वाहन पर आ गए हैं और तो और अपने पेशे के स्वभाव के विपरित अपने वहां कुछ गुड्डों को भी पाल रक्खे है. जो उनके लूट में बाधक बनने वालों को हड़काते है और जान से मारने की धमकी देते है. एक छोटा सा उदाहरण–

एक मरीज सायंकाल भर्ती होता है. उसका प्राथमिक ट्रीटमेंट कर उसे भर्ती कर लेते है. जो उनके बस की बीमारी नहीं है. कमरे का किराया 250 प्रतिदिन, सुई, बोतल, दवा देने का चार्ज अलग से, दवा उनके ही क्लीनिक में ही मिलती है. ये सभी दवाएं बाजार की सबसे मंहगी दवाए होती है. शायद उनके वहां वही दवाएं मिलती है जिस कंपनी से सबसे अधिक कमीशन उनको मिलता है. प्रत्येक दिन सुबह नई दवा, दोपहर को नई दवा और सायंकाल नई दवा. दवा खरीदते रहिए और पैसा पानी की तरह फेंकते रहिए. मरीज की बीमारी ब्लड प्रेशर व लकवा का हल्का सा असर. मरीज धीरे–धीरे सामान्य होता है. वे कहते है–चिंता की कोई बात नहीं मरीज बिल्कुल ठीक हो जाएगा. दो दिन बाद मरीज को छोड़ दुंगा. क्यों आप पैसा फालतू मेडिकल कॉलेज ले जाकर खर्च करेंगे. जॉच जारी है.मरीज उठ कर बैठने लगता है. लेकिन जिस दिन मरीज को छोड़ना होता है उस दिन सुबह से मरीज की हालत धीरे–धीरे गम्भीर होने लगती है वह यह जानकर की यह मरीज हमारे वहां डिस्चार्ज कराने के बाद मेडिकल कॉलेज चला जायेगा आगे के चेकअप के लिए. प्रातः 10 बजे भगवान के रुप डॉ0 चन्द्रभान मिश्रा अपने नियमित दौरे पर आते है. मरीज की दवा बदलते है. और अपने कम्पाउन्डर से नली लगाने के लिए कहते है और चले जाते है. कम्पाउन्डर मरीज के अटेनडेंट के बार–बार कहने पर ऐसा नहीं करता. प्रातः कालीन ड्यूटी का कम्पाउन्डर जो रात्रि को भी ड्यूटी किया होता है, सरकारी अस्पताल की तरह अलग से चाय पीने के लिए पैसा मांगता है. मरीज का अटेडेंट चाय पिलाने को कहता है पैसा देने को राजी नहीं होता. लेकिन मरीज के कहने पर 50 रुपये की नोट चाय पीने के लिए लेता है और कहता है किसी से कहिएगा नहीं. मैं आपके बहुत काम आउंगा. 10बजे दूसरा कम्पाउन्डर आता है. उसको भी डाक्टर का आदेश बताया जाता है. मगर कोई फायदा नहीं. डॉक्टर से मिलने को आतुर मरीज के अटेंडेट को यह कहकर मिलने नहीं दिया जाता कि डॉक्टर मरीज देख रहे है. एक बार 2बजे मिलने का मौका मिलता है. डॉक्टर से मरीज के सिरियस हालत के बारे में बताया जाता है, डॉक्टर कुछ देर बाद आने का अश्वासन देकर छुट्टी पा लेते है. इधर मरीज की हालत और पतली हो जाती है, उसकी बोली बंद हो जाती है, यहां तक चाय ब्रेड आसानी से खाने वाला मरीज पानी पीने में भी अक्षम साबित होने लगता है. अपरान्ह चार बजे दुबारा डॉक्टर के पास मरीज के अटेडेन्ट जाते है. डॉक्टर को कोई गम नहीं. मरीज की सॉस बंद हो जाती है. अस्पताल में हल्ला होता है तब डॉक्टर आते है, देखते है और अपने कम्पाउन्डर को पुनः आदेश देकर चले जाते है. सायंकाल 7 बजे मरीज को दुसरा अटैक होता है और वह कोमा मे चला जाता है. मरीज के घर वालों की धीरे–धीरे लाइन लग जाती है. दबाव देखकर डॉक्टर फिर आते है. आक्सीजन देकर, फेफड़े से पानी निकालते है और मशक्कत करते है. सायंकाल 8बजे मरीज के लड़के से कहते है कि 98 प्रतिशत मरने की सम्भावना है. मरीज के घर के लोग रोना प्रारंभ कर देते है. सायंकाल मरीज के घर वालों द्वारा डिस्चार्ज कर बीएचयू ले जाने की बात सुन उनके कान खड़े हो जाते हैं. वे उन्हें

पहले तो लम्बा चौड़ा लेक्चर पिलाते हैं कि मरीज रास्तें में मर जायेंगा, आप अपना फालतू में क्यों बर्बाद करना चाहते हैं इत्यादि. बात बनते नहीं देख कम्पाउन्डर से बिल बनाने को कहते हैं. कम्पाउन्डर लम्बा चौड़ा बिल थमा देता हैं. मरीज के घर वाले बिल की एक कापी मांगते हैं तो उसे देने से इनकार कर देते हैं. इस पर बात बढ़ती है तो चन्द्रभान मिश्रा के रिश्तेदार, उनकी बीबी, कुछ गुंडे आकर खड़े हो जाते हैं और धमकी देने लगते हैं. इस मरीज के घर वालों में से एक थोड़ा गरम होता है तो डा.सी.बी. मिश्रा कहते हैं–"कौन साला बोल रहा है उसे मैं अभी पटक कर मारुंगा." उधर उनकी सम्मानीया पत्नी मरीज के घर की औरतों को गाली देने लगती है. बात थोड़ी आगे बढ़ने पर डॉ. अपने गुडडों से बंदूक लाने को कहते है. बड़े बुढ़ों के बीच बचाव व मरीज की हालत को देखकर मरीज के घर वाले किसी तरह पॉच दिन का कमरे का चार्ज, सुई, बोतल लगाने का चार्ज बिना दवा के बिल के 5000 रुपये भरते हैं. इसमें कमरे का किराया 250 रुपये के हिसाब से 1250 रुपयें मात्र होता है, बाकी उनका कुल 10 सुई, 20 बोतल चढ़ाने का बिल हैं.

मरीज का इलाज बीएचयू में होता है और तीन बाद मरीज कोमा से बाहर आता है. आज उसके शरीर में लकवा के लक्षण कहीं भी मालूम नहीं चलते हैं. मरीज से बात करने के लिए आप हमारे कार्यालय में फोन कर समय ले सकते हैं.

जानकारी के लिए बता दें कि डॉ. सी. बी.मिश्रा की पहली पत्नी जलकर कुछ वर्षो पूर्व मर चुकी है. उसका केस पैसे से ही दब गया.

ek= ,d gtkj #i;s esa viuh chch dks jD[kk ca/kd

ससुर ने रचायी बहू से शादी

✍**संतोष कुमार दुबे**, ब्यूरो देवरिया

देवरिया जिले के ग्राम–महुजा निवासी एक प्रतिष्ठित इंटर कॉलेज के प्रवक्ता जयनारायण पाण्डेय ने अपनी भाई की बहू से शादी रचायी. प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम महुजा के अमित पाण्डेय एवं रमेश पाण्डेय नौकरी करने के उद्देश्य से दिल्ली गये साथ में दोनों अपने परिवार को भी ले गये. वहॉ एक कमरा किराये पर लेकर रहने लगे. धीरे–धीरे नौकरी ढूढ़ने का प्रयास करने लगे. पहले तो उनके लायक कोई काम मिला नही जहॉ मिला भी वहॉ इतनी तनख्वाह कम थी कि उतने में उनका गुजारा ही नहीं हो सकता था. धीरे–धीरे साथ में ले जाया गया पैसा भी खत्म हो गया. एक समय ऐसा आया कि उनके पास घर लौटने तक के लिए किराया भी नहीं बचा.अब उनके सामने यह समस्या आयी कि वे कैसे अपने गांव जाये तो उन लोगों ने अपने आस–पास कुछ लोगों से इस बारे में बात की.बहुत समझाने बुझाने पर एक आदमी इस शर्त पर दो हजार रुपये देने को तैयार हुआ कि तुम लोग अपनी बीबीयों को यहीं छोड़कर जाओ और जब मेरा पैसा वापस करोगे तो तुम लोगो की पत्नी को वापस करूंगा. मरता क्या न करता. वे दोनों तैयार हो गये और पैसा लेकर अपने गॉव वापस आये. गॉव से अपने चाचा से कुछ पैसे उधार लिये और पुनः दिल्ली गये और अपनी–अपनी पत्नियों को वापस लाये. अपने गॉव वापस आने पर अमित पाण्डेय के चाचा जयनारायण पाण्डेय ने अपने पैसे के बदले उसकी बीबी के सामने शादी की प्रस्ताव रक्खा मजबूरी वश कहें या पहले से दोनों के बीच कुछ चक्कर था. अमित की पत्नी शादी करने को तैयार हो गयी. जयनारायण पाण्डेय जिनकी उम्र लगभग 45 वर्ष के आस–पास होगी. उनका अपना भरा पुरा परिवार भी है. ने अमित का घर उजारकर अपनी चचेरी बहू से शादी रचा ली.

पात्रों के नाम समाज हित में बदल दिये गये हैं

आवश्यकता है

साप्ताहिक समाचार पत्र **द हंगामा इंडिया** हेतु गोरखपुर, देवरिया, बलिया, सिवान, गाजीपुर, मउ, कुशीनगर, महाराजगंज, आजमगढ़, वाराणसी में

0 संवाददाता 0 विज्ञापन प्रतिनिधि
0 विज्ञापन एजेंट 0 ब्यूरो 0 एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें :

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय ,रिफ्यूजी कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ. सर्वप्रथम गणेश वंदना प्रस्तुत कर बच्चों ने दर्शकों का मन मोह लिया. यह अपने आप में एक नयी परम्परा थी. सामान्यतः कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना से होता है.

कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण छात्राओं द्वारा प्रस्तुत बेलकम सांग, नैया तेरी मझधार, चंदा मामा रहे. इसके अतिरिक्त इंग्लिश सांग, पहाड़ी नृत्य, बेटी घर में नाटक, राजस्थानी नृत्य, डांडिया नृत्य आदि कार्यक्रम बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किया गया.

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए प्रो0 के.बी.पाण्डेय, अध यक्ष, लोकसेवा आयोग ने कहा–इस छोटे से विद्यालय में इतने छोटे–छोटे बच्चों द्वारा प्रस्तुत इतना मनमोहक कार्यक्रम देखकर मैं भाव विहवल हो गया. चंदा मामा में तो बच्चों ने लोमहर्षक प्रस्तुति की. मैं अस्वस्थ था और थोड़ी देर ही रुकने की सोचा था, लेकिन बच्चों के मनोहारी प्रदर्शन को देखकर मैं न चाहते हुए भी पूरा कार्यक्रम देखा. कार्यक्रम को देखकर यह आभास होता है कि विद्यालय की प्रधानाचार्य सपना गोस्वामी व उनकी सहयोगी शिक्षिकाओं ने काफी मेहनत की है. बिना कड़ी मेहनत के इतना अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत हीं नहीं किया जा सकता.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. एस.एस.शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि–'मैं इस विद्यालय से पूव परिचित हूँ. इस विद्यालय में पढ़न–पाठन में विशेष ध्यान दिया जाता है. विद्यालय के प्रबंधक श्री राजकिशोर भारतीय हमेशा पठन–पाठन को लेकर गहन विचार–विमर्श करते रहते हैं. विद्यालय परिवार के कठिन परिश्रम का ही परिणाम है जो इतनी प्रतिस्पध र्ा के बावजूद इस विद्यालय में प्रतिवर्ष छात्रो की संख्या बढ़ती जा रही है. वास्तव में इस विद्यालय में एक आदर्श विद्यालय की परिकल्पना साकार होती दिखती है.

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी व मेध ाावी छात्रों/छात्राओं को वेस्ट हैंडराइटिंग, वेस्ट नृत्य, वेस्ट कला, वेस्ट इन स्टडी व सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए पुरस्कृत किया गया. सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार मोहम्मद कैश ऑलम को प्रदान किया गया.

कार्यक्रम को तैयार कराने का अगर वास्तविक श्रेय किसी को दिया जा सकता है, तो वो हैं विद्यालय की सहायक अध्यापिका श्रीमती शिखा गिरी. जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से, समय का ध्यान न रखते हुए पिछले दो महीने से अथक परिश्रम कर सुन्दर प्रस्तुतीकरण के लिए बच्चो को तैयार किया. वार्षिकोत्सव को सकुशल सम्पन्न कराने का मुख्य श्रेय विद्यालय परिवार के ही अथक परिश्रमी, दृढ़निश्चयी, कोमल हृदयी, स्नेह सम्राट श्री मोहित गोस्वामी को जाता हैं.

इस अवसर पर हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के प्रधान संपादक एवं स्नेहालय(अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) के संचालक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री राममिलन गिरी, विद्यालय के प्रबंधक श्री राजकिशोर भारती तथा 42वी वाहिनी पी.ए.सी. के तमाम गणमान्य अधिकारी तथा नागरिक उपस्थित थे.

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की होनहार, मृदुभाषिणी, अनुशासनप्रिय, पढ़न–पाठन में अपना जीवन समर्पित करने वाली, अपने सहयोगियों से अथाह स्नेह रखने वाली, उनके सुख–दुःख में सहभागी होने वाली विशाल हृदय की स्वामी श्रीमती सपना गोस्वामी ने किया. जिनके बारें में आप यह कह सकते हैं कि वे एक आर्दश प्रधानाचार्या व प्रशासक हैं.

I;kj dh lhek

राकेश के व्यक्तित्व पर उसकी पकड़ कितनी मजबूत हैं—यह सीमा भली प्रकार से जानती थी. उसे इस बात का पूरा अनुमान था कि उसकी सुन्दरता—उसका यौवन—उसका हाव—भाव राकेश को पागल बना देता है. अब भी वह अजीब नजरों से उसकी ओर देख रही थी. उसे अपनी सफलता का पूरा यकीन था.

मानसी

सीमा की जिद—उसका आग्रह राकेश को पागल किये दे रहा था. इस समय भी वह राकेश के कमरे में थी.

राकेश का घर उसके घर के लगभग सामने ही था. शाम की ढलती धूप में खिड़की में से कूद कर वह अन्दर आई थी. खिड़की में से आती हुई धूप ने न केवल कमरे को ही प्रकाशमय बना रखा था, बल्कि इस धूप में सीमा की खूबसूरती, उसके आकर्षण, उसके यौवन को भी निखार दे दिया था. उसके घने काले बाल, उसके गुलाबी गाल, उसके सफेद लिबास में और भी अधिक लुभावने लग रहे थे. राकेश तो पहले से ही उसका दीवाना था, उसके लिए अपने आप को और भी दीवाना महसूस कर रहा था. उसका जी चाह रहा था कि आगे बढ़कर उस रुप और रस की देवी को अपनी बांहो में भर ले.

"तुम समझते क्यों नहीं राकेश! वह बूढ़ी है—बहुत ही बूढ़ी",सीमा बार—बार कहे जा रही थी, "मैं सच कहती हूँ—उसे जरा बराबर भी कष्ट नहीं होगा. तुम्हें इस बारे में मेरी थोड़ी सी सहायता करनी होगी. बाकी सब मैं स्वयं सम्भाल लूंगी."

अब मुझसे और सहन नहीं हो पा रहा, सच राकेश, मैं उससे घृणा करने लगी हूँ. असीम नफरत'

"वह तुम्हारी नानी है सीमा," राकेश ने उसे समझाते हुए कहा, "तुम्हें उससे इस प्रकार घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है, तुम्हें उससे घृणा नहीं, उसकी सेवा करनी चाहिए. उसे तुम्हारे प्यार, तुम्हारे सेवा की आवश्यकता है. "

"तुम यह सब कुछ इसलिये कह रहे हो क्योंकि तुम उसे ठीक से जानते नहीं हो" सीमा ने तर्क पूर्ण उत्तर दिया,"उसने मेरे जीवन को नर्क बना रखा हैं. तुम्हें मालूम नहीं कि वह किस प्रकार हर समय, हर क्षण मुझे संदेह

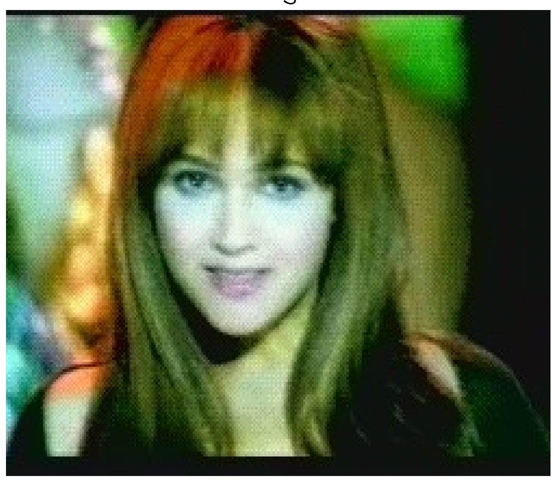

भरी नजरों से घूरती रहती है. किस प्रकार वह मेरे पीछे—पीछे फिरती है. किस प्रकार मेरे आने—जाने पर उसकी कड़ी नजर रहती है और वह सवेरे से शाम तक मुझसे क्या कुछ कहती रहती है. यदि तुम्हें वह सब कुछ सहन करना पड़े तो तुम भी घृणा और क्रोध से पागल हो जाओगे. मैं सच कहती हूँ राकेश, पागल हो जाओगे."

राकेश उसके तर्क एवं उसके विचार से सहमत नही था. कहने लगा "मैंने भी तो कई बार देखा है. मुझे तो वह ऐसी नहीं लगती, जो किसी को कष्ट दे सके, या फिर किसी का बुरा भी सोच सके." राकेश ने अपने मन की बात इस प्रकार निसंकोच और पूरी ईमानदारी से कह दी थी. जिसके फलस्वरुप वह नाराज हो गई और मुंह फेर कर खड़ी हो गई. राकेश ने महसूस किया कि उसे इस प्रकार सीमा के दृष्टिकोण के विरोध में इतना कुछ नहीं कहना चाहिए था.

अब राकेश के लिए उसकी ओर देख पाना भी कठिन हो रहा था. वह उसकी ओर देखता था तो यह सोचने लगता था कि वह अपनी इस हसीन प्रेमिका के लिए कुछ भी कर सकता है. सीमा को पा लेने की चाहत उसकी सोच—समझ को बेकार और अपंग कर दिया करती थी. सीमा उसके इतना निकट होते हुए भी उसकी पहुँच से बाहर थी. उसने अपने और अपने प्रेमी के बीच एक शर्त की मोटी दीवार खड़ी कर रखी थी. उसकी मांग थी कि जब तक वह उसकी सहायता नहीं करत, वह उसकी होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी.

राकेश जो कुछ भी उसे समझाने की चेष्टा करता था उस पर वह जरा बराबर भी ध्यान नहीं देती थी. इस प्रकार वह एक अजीब सी उलझन में फंस गया था. वह अब महसूस करने लगा था कि किसी नौजवान के मन में अपनी प्रेमिका को पाने की इतनी तीव्र चाह नहीं होनी चाहिए जो उसे प्रेमिका का गुलाम बना कर रख दे. कभी—कभी प्यार की यह सीमा उसके मन में एक अजीब सा भय पैदा कर देती थी.

"देखो सीमा रानी," राकेश ने उसे एक बार फिर से समझाने की चेष्टा करते हुए कहा—"मेरी नौकरी बहुत अच्छी न

सही फिर भी काफी अच्छी है. मुझे मेरा काम पसन्द है और मैं उसे दिल लगाकर करता हूँ. शीघ्र ही मेरी पदोन्नति हो जायेगी और हमारे पास इतनी राशि हो जायेगी कि हम अपना निजी मकान खरीद सकेगें. यदि तुम चाहो तो तुम्हारी वृद्ध नानी जी भी हमारे साथ रह सकती है. उन्हें अलग से एक कमरा दे देंगे और उसकी देखभाल के लिए एक नौकर की व्यवस्था भी की जा सकती है. मेरे विचार में कुछ अधि खर्च नहीं होगा और यदि तुम चाहो तो...."

"बस! बस भी करो,"सीमा ने बात काटते हुए कहा और गुस्से में राकेश के सीने पर मुक्को की वर्षा करने लगी. उसके चेहरे पर एक अजीब से पागलपन के लक्षण दिखाई दे रहे थे, जिससे राकेश क्षण भर के लिये भयभीत होकर रह गया.

सीमा ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा, "बस करों राकेश! मैं तुम्हें पहले से ही बतला चुकी हूँ कि जब तक नानी जीवित है मैं तुमसे शादी नहीं करुंगी. तुम उसे ठिकाने लगाने के लिए मेरी लेश मात्र सहायता तो करोगे ही. इसके अतिरिक्त तुम्हारे–हमारे मिलन का और कोई रास्ता नहीं हैं. समझे?"

"सीमा!" राकेश ने कुछ कहना चाहा. पर उसने पुनः बात काटते हुए कहा, "वह कोई कम आयु की महिला तो नहीं है. वह अपनी आयु का एक लम्बा सफर तय चुकी हैं. बूढ़ी है, कमजोर हैं, बीमार हैं. अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह मेरे जीवन को नर्क बनाने मात्र के लिए ही जीवित हैं. अब तो यूं लगता है जैसे औरों का जीवन भी वह स्वयं जीना चाहती है. चाहती है मेरी उम्र भी उसे ही लग जाये"

गुस्से में फुंकारते हुए अपनी सांसों पर काबू पाने के लिए वह क्षण भर को रुकीं और फिर कहने लगी, "इस आयु में भी उसे जीवित देखकर आश्चर्य होता है. अब तक तो उसे हर हाल में मर ही जाना चाहिए था. मैं कहती हूँ राकेश, यह काम बिल्कुल सरल है. इतना आसान है कि तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते"

"सीमा! मेरे विचार में तुम गुस्से में लगभग पागल हो चुकी हो. गुस्से के कारण तुम ठीक से सोच भी नहीं पा रही हो. तुम्हें तो इस बात का आभास भी नहीं कि तुम कह क्या रही हो."

वह एक बार फिर घूम गई और धम्म से बिस्तर पर जा गिरी. तकिये में अपना मुंह छुपा कर वह सुबक–सुबक कर रोने लगी. हर एक सुबकी के साथ उसके लचीले शरीर में ऐसे झटके लग रहे थे जिससे साफ प्रतीत हो रहा था कि वह असहाय मानसिक पीड़ा से इतनी विचलित हो रही है जिसे वह बयान भी नहीं कर सकती.

सिसकियों के बीच–बीच में दबी–दबी तथा रुकी–रुकी आवाज में वह बोली,"राकेश डियर! तुम मेरी बात को नहीं समझ पा रहे हो. इसमें मैं तुम्हारा दोष नहीं मानती. जिस मानसिक कष्ट का आभास मैं करती हूँ और भला कोई क्या करेगा? मैं तुम्हें बताती हूं. जीवन भर वह औरत एक प्रेत–आत्मा की तरह मुझसे चिपकी रही है. जब से मैंने होश सम्भाला हैं मैं उसे ऐसा ही देख रही हूं. वह काली साड़ी, वह काली आंखे, वह सफेद बाल, लम्बी तोते जैसी नाक जीवन भर उसकी आंखे और उसकी आवाज मेरा पीछा करती आ रही हैं. सीमा तुम कहां हो? तुम कहां जा रही हो, कहां से आ रही हो? सीमा बेटी जरा कैमिस्ट की दुकान से मेरे लिए यह दवाई तो लेती आना, मुझे यह ला दो, मुझे वह ला दो. सीमा तुम्हारा सम्पर्क किसी नये मित्र से हुआ है क्या? अपने मित्र से अकेले में तो नहीं मिलती न? देखों! ऐसी भूल कभी मत करना. आजकल के छोकरे, ईश्वर बचायें इनसे! सीमा बेटी नाश्ता कर लो, सीमा बेटी दूध तो तुमने पिया ही नहीं. सीमा बेटी खाना खा लो. रात बहुत हो चुकी है सीमा बेटी सो जाओ, अब उठ जाओं. मेरा चश्मा तुमने कहां रख दिया है? सीमा तुम अपनी मां जैसी बिल्कुल ही नहीं हो. तुम मेरी अधिक सेवा नहीं करना चाहती. तुम्हें तो शायद मेरे मरने की भी कोई परवाह नहीं हैं. मुझे सब मालूम है. तुम क्या कुछ करती रही हो. देखो सीमा, तुम्हें छुप–छुप कर ऐसी हरकतें नहीं करनी चाहिए. एक न एक दिन तुम जरूर पछताओगी. जवानी हम पर भी आई थी, पर हमनें तो कोई ऐसी वैसी हरकत नहीं की, आग लगे ऐसी निगोड़ी जवानी को. बस हर समय ऐसी अजीब–सी बात सुनने को मिलती हैं."

एक क्षण भर को चुप्पी के बाद वह निर्णायक स्वर में बोली,"यह सब कुछ इसी प्रकार अधिक देर तक नहीं चलता रहना चाहिए. अब इसे समाप्त होना चाहिए. मैं इसे अब खत्म कर दूंगी."

वह बिस्तर पर से उठ खड़ी हुई और राकेश के निकट आ गई. राकेश के मन में फिर एक बार उसे पा लेने की तीव्र इच्छा पैदा हुई. सीमा की निकटता उसे इस सीमा तक मदहोश कर देती थी कि सहन करना कठिन होता था. फिर जब वह उससे थोड़ी दूर हट गई तो राकेश की जान में जान आई.

"सीमा! देखों सीमा! मैं तो तुम्हें यही सलाह दूंगा कि तुम यह विचार छोड़ दो, इस योजना को सिरे से अपने दिमाग से निकाल दों."

"नहीं..." वह दृढ़ स्वर में चीख उठी, "मै अब इस योजना को कार्य रुप देकर ही दम लूंगी. तुमसे तो मेरा बस इतना ही अनुरोध है कि तुम इस अवसर पर मेरे साथ रहो. तुम्हें करना कुछ भी नहीं पड़ेगा. बस रात को मेरे यहां आ जाना और फिर इस काम के दौरान मेरे साथ रहना. इस प्रकार मेरे दिल की शक्ति मिलेगी. मैं अकेली यह काम नहीं कर सकती. तुम मेरे साथ होगे तो मेरी हिम्मत बढ़ेगी. बस तुम्हारी उपस्थिति मात्र ही काफी हैं."

राकेश मन ही मन कांप रहा था, भय

से नहीं बल्कि सीमा को पा लेने की प्रबल इच्छा से. उसका पूरा शरीर पसीने के कारण भीग चुका था. राकेश के व्यक्तित्व पर उसकी पकड़ कितनी मजबूत हैं. यह सीमा भली प्रकार से जानती थी. उसे इस बात पर पूरा अनुमान था कि उसकी सुन्दरता, उसका यौवन, उसका हाव–भाव राकेश को पागल बना देता है. अब भी वह अजीब नजरों से उसकी ओर देख रही थी. उसे अपनी सफलता का पूरा यकीन था.

"देखो राकेश, डियर! बस तुम रात को उसके बेडरुम में मेरे साथ उपस्थित रहना और करना कुछ भी नहीं. जो कुछ भी करना है, जैसे भी करना हैं, मैं स्वयं कर लूंगी." वह समझाती हुई बोली, "बस मैं तकिया उसके मुंह पर रखकर उसे पूरी शक्ति से दबाये रखूंगी, उसका दम घुटने में अधिक देर नहीं लगेगी. इस काम के लिए मैं अकेली ही काफी हूं. इस काम में अधिक शक्ति की जरुरत भी नहीं है."

यह फैसला कर लेने के पश्चात उसकी आंखों में एक नई एक विशेष चमक आ गई थी. "इसके पश्चात राकेश डियर, देखना जीवन कितना सुन्दर, सुखद और सुहाना हो जायेगा. हम शादी कर लेगें. नानी अम्मा की जमा पूंजी भी हमारी हो जायेगी और हमारे रास्ते में और किसी प्रकार की रुकावट शेष नहीं रहेगी."

आने वाले सुखद जीवन के विचार मात्र से ही वह जोर–जोर से हंसने लगी. राकेश स्तब्ध रह गया. उससे कुछ भी नहीं बोला जा रहा था. वह उसे झंझोड़ती हुई फिर घूरने लगी, "बोलो राकेश, तुम मेरे साथ रहोगे ना? अब देख लो नहीं तो तुम मुझे कभी नहीं पा सकोगें. उस बुढ़िया मे मेरा आधा जीवन तो नष्ट कर ही दिया हैं. मैं नही चाहती कि मेरा शेष जीवन भी इसी प्रकार जलते–कुढ़ते बीते. बोलों, तुम मेरा साथ दोगे ना?"

सीमा के इतना निकट होने पर राकेश को अपनी सांसों में चाहत की गर्मी का आभास होने लगा. वह व्याकुल हो उठा. यह कैसी विडम्बना है कि वह उस तपते यौवन के इतना निकट होते हुए भी आगे बढ़कर उसे अपनी बांहो में नहीं थाम सकता. वह अपनी इस विवशता पर परेशान था.

"अच्छा, अच्छा ठीक हैं, ठीक हैं." उसने जल्दी से कहा और उसे यूं प्रतीत हुआ जैसे यह आवाज उसकी अपनी नहीं थी, बल्कि उसके अन्दर की चाहत बोल रही थी.

सीमा एकदम से उछल पड़ी. वह जब इस प्रकार खुशी से दीवानी हो उठती थी, तो उसका यह दीवानापन औरों के होश को भी अपनी लपेट में ले लेता था. राकेश उसे ललचाई नजरों से देखता ही रहा. रात काफी देर तक वह राकेश के पास ही रही.

फिर उसके घर जाने के लिये वह दोंनों निकल पड़े. दोनों के मन की भांति बाहर गली में भी अंधेरा था. शक्की मिजाज बीवियों की भांति इमारतें सर उठाये खड़ी थीं. राकेश अपने आपको उन वायदों से बहलाने की चेष्टा कर रहा था, जो उससे किये गये थे. अब उन वायदों की सुगन्ध उसके रोम–रोम में बस चुकी थी. सीमा के साथ बीतने वाले उसके आगामी जीवन का विचार मात्र ही उसे किसी दूसरी दुनिया में पहुंचाये दे रहा था.

राकेश को इस प्रकार खामोश देखकर सीमा ने उसका साहस बढ़ाते हुए कहा,"बस! केवल कुछ ही मिनट की बात हैं. बस! फिर मैं इस झंझट से हमेश–हमेशा के लिये छुटकारा पा लूंगी. फिर हम अपना जीवन सुखी विवाहित जीवन, अपनी आशाओं के अनुरुप बिता पायेंगे."

वे दोनों अब सीमा के घर तक पहुंच चुके थे. केवल बैठक में ही धीमी–सी रोशनी दिखाई दे रही थी. आंगन में लगे सफेदे के पेड़ हवा में धीरे–धीरे मस्ती में झूम रहे थें. फूलों की सुगन्ध भली लग रही थी.

हुस्न वाले वफ़ा नहीं करते
हम किसी से गिला नहीं करते।
रात ही रात हैं नसीबों में
सुबह का आसरा नहीं करते।
आमने सामने तो रहते हैं
दो किनारें मिला नहीं करते।
हो न हो हम भी हो गये पागल
रोने वाले हॅसा नहीं करते।
सब के हक़ में दुआयें करते हैं
अपने हक़ में दुआ नहीं करते।
आदमी से कसूर होता है
हॉ फ़रिश्ते ख़ता नहीं करते।
सबसे मिलते हैं, बात करते हैं
खोये–खोये रहा नहीं करते।
बज़्म के कुछ उसूल होते हैं
दरमियॉ से उठा नहीं करते।
काश कह दे किसी से कोई "शरीफ"
आओ बैठो, हया नहीं करते।

शरीफ़ कुरेशी
1/91, भूसा मण्डी, फतेहगढ़,
फर्रुखाबाद, उ.प्र. पिनः 209601

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह सोने के लिये लेट चुकी हैं," सीमा ने धीमी आवाज में कहा. अनजाने भय के उस विचित्र वातावरण में भी उसकी निकटता राकेश के मन को बुरी तरह प्रभावित किये हुए थी. उस मिले–जुले अन्धेरे में भी सीमा कीं आंखे एक अजीब से जोश से चमक रही थी.

वह दोनों दबे पांव मकान में प्रविष्ट हुए. राकेश इस समय यह नहीं सोच रहा था कि वह क्या करेगी और किस प्रकार करेगी. इस समस्या से तो उसने पूरी तरह अपना ध्यान हटा लिया था. वह तो एक अलग सी दुनिया में खोया हुआ था–चाहत की दुनिया. चाहत के कांटे में फंसी मछली की तरह वह आगे तैरता हुआ चला जा रहा था.

"तुम्हें कुछ बोलने, कुछ करने की बिल्कुल कोई जरुरत नहीं हैं." सीमा ने एक बार फिर से उसका साहस बढ़ाने

की चेष्टा करते हुए कहा,"तुम बस मेरे पीछे खड़े चुपचाप देखते ही रहों."

राकेश उसके पीछे चलता हुआ रसोई घर और बैठक पार करता हुआ भरी पर्दो वालें सोने के कमरें में पहुंचा. अधिक समय तक बन्द रहने वाले कमरें की भांति उस कमरे में अजीब सी गन्धा महसूस हो रही थी. एक खिड़की के शीशें में से चांद की रोशनी अन्दर आ रही थी, जो उस समय सीमा की पीठ पर पड़ रही थी.

राकेश उसके पीछे था और सीमा की उठती गिरती सांसों की आवाज सुन रहा था. उसकी सांसों में कोई अजीब सी बात थी, जो राकेश को चौका रही थी और उसे भयभीत भी किये दे रही थी.

राकेश ने बिस्तर पर लेटी हुई उस वृद्ध औरत को देखा. धुधली रोशनी में वह बहुत ही कमजोर लग रही थी. उसकी कमजोर हड्डियों की सी बाहें उसके सीने पर निश्चत सी पड़ी थी और नोकदार नाक उसके चेहरे पर विशेष रुप से दिखाई दे रही थी.

सीमा ने सहसा एक तकिया उठाया और फिर अचानक वह राकेश की ओर मुड़ी. राकेश यह देखकर आश्चर्य चकित रह गया, वह मुस्करा रही थी. "उसे मालुम तो होना चाहिए कि उसके साथ क्या कुछ होने वाला हैं."

सीमा ने धीमी आवाज से बुदबुदाते हुए कहा, "मैं पहले उसे जगाती हूं. यह तो कोई बात नहीं होगी न कि अनजाने में ही उसकी मौंत हो जाये.

राकेश ने उसे रोकने के लिए कुछ कहना चाहा. पर न जाने क्यों उसके कण्ठ से आवाज ही नहीं निकल पाई.

"बुढ़िया, ए बुढ़िया, उठों," सीमा अपनी नानी को झंझोड़ती हुई बोली. नानी शायद गहरी नींद सोई थी. सीमा ने उसकी बांहों को जोर से थपथपाया और फिर चीखती हुई बोली, "अब जाग भी जाओं. मुर्दो की भांति मत लेटी रहों. मुर्दा तो हम तुम्हें बनाने आये हैं."

नवोदित कवि

नये साल में!

शिकवे सारे दूर करेंगे नये साल में,
हम–तुम दोनों गले मिलेंगें नये साल में।
सॉझा होगा ईद–दिवाली और दशहरा,
एक नया इतिहास रचेंगे नये साल में।
अम्नों–अमां के फूल खिलाने की खातिर हम,
गुलशन का श्रृंगार करेंगे नये साल में।
रहे न कोई भूखा–प्यासा देश में अपने,
दहकानों से बात कहेंगे नये साल में।
कुर्सी से उम्मीद लगाना बेमानी है,
खुद कोई तद्बीर करेंगे नये साल में।
देख सके ना कोई दुश्मन ऑख उठाकर,
हम आपस में ढाल बनेंगे नये साल में।
इक–दूजे की बन जायें परछाई 'सूना'
फिर मन्जिल की ओर बढ़ेगे नये साल में।

प्रकाश सूना
मुरलीधर सदन, 187–बी, गॉधी कॉलोनी, निकट गॉधी वाटिका, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. 251001

नानी तब भी नहीं जागी.

सीमा पर जैसे जुनून सवार हो गया. उसने अपनी नानी की बाहों पर दो तीन थप्पड़ जमाये और उसे झंझोड़ने लगी. मगर नानी फिर भी नहीं जागी. जागती भी कैसे? क्योंकि वह मर चुकी थी.

सीमा राकेश की ओर मुड़ती हुई चीखी, "देखों, राकेश, वह..वह एक बार फिर हरा गई. मैं जो चाहती थी, वह नहीं करने दिया उसने मुझे."

वह तकिये पर घूंसे बरसाने लगी. फिर उसने अपनी नानी के मृत शरीर को भी नहीं बख्शा. वह लाश पर भी मुक्के बरसाती रही.

राकेश के मन में दहकती चाहत की आग शान्त हो गई. जैसे उस पर मनों पानी डाल दिया गया हो.

राकेश खामोशी से चुपके–चुपके से कमरे में से बाहर निकल गया. जो कुछ भी हुआ था अच्छा ही हुआ था. आज सहसा ही वह सीमा की चाहत के बन्धन से मुक्त हो गया था. जो काम वह

कैसे बनेगा मेरा भारत महान

हर आदमी सोचता है
इस देश में कभी न भ्रष्टाचार हो
हर इंसान के अन्दर
पारदर्शी और नेक विचार हो।
हर आदमी सोचता है
संतान इंजीनियर या डॉक्टर हो
कोई विदेशी अफसर हो
एस.पी. चाहे कलेक्टर हो
हर आदमी सोचता है
स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो
शांति अहिंसा बनी रहे
पैसा नहीं प्रतिभा का गुणगाान हो।
हर आदमी सोचता है
फिर कोइ गॉधी, नेहरु लाल हो
वीरों की धरती पर,
फिर कोई लक्ष्मी, भगत, सुभाष हो।
पर कोई ये नहीं सोचता
दूसरों से पहले स्वयं के नेक विचार हो
किसी और के नहीं
गॉधी सुभाष उसकी ही संतान हो
ऐसे में कैसे होगा
स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् वाला
कैसे बनेगा मेरा भारत महान?

श्रीमती संगीता बलवन्त
प्रीतम नगर कॉलोनी, वंशी बाजार, गाजीपुर

अपने आत्म–विश्वास के बलबूते पर नहीं कर पाया था, अब सीमा के इस कार्य से स्वयं ही हो गया था.

आज राकेश ने अपनी प्रेमिका का वास्तविक रुप देख लिया था और वह उसके व्यक्तित्व के जादू से आजाद हो गया था. वह अब चाहतों के बन्धन से निकल आया था. हमेशा वह उसे जितनी सुन्दर और आकर्षक लगती रही थी आज वह उतनी ही कुरुप और घिनौनी दिखाई दे रही थी.

ऐसी लड़की की चाहत भला किस प्रकार की जा सकती थी और ऐसी लड़की भला किसी से प्यार क्यों कर सकती थी? राकेश खुश था क्योंकि अब उसे सीमा को पाने की इच्छा हीं नहीं रही थी. ❍

इंजीनियर बने और भविष्य संवारे

वर्ष 1998 में राष्ट्रीय राजमार्ग और स्वर्णिम चतुर्भुज की परियोजना और रिवर ग्रिड परियोजना की घोषणा से सिविल इंजीनियरिंग डिगरी प्राप्त युवाओं के लिए फिर से अवसर बने हैं. वर्ष 2016 तक चलने वाली इस परियोजना में विशेषज्ञ आशा कर रहे हैं कि मांग आपूर्ति से ज्यादा भी हो सकती है. आईटी कंपनियों ने भी भर्तिया फिर से प्रारंभ कर दी है. सॉफ्टवेयर कंपनियॉ अब केवल इंजीनियरिंग और एमसीए किए हुए युवाओं को ही तरजीह दे रही है. वहीं भारत में प्रत्येक क्षेत्रमें तेजी से बढ़ते कंम्प्यूटराइजेशन के कारण हार्डवेयर तथा नेटवर्किंग इंजीनियर ही नहीं लघु अवधि का कोर्स किए हुए युवाओं का भी भविष्य उज्जवल है. सॉफ्टवेयर तकनीक में पारंगत लोगों की भी जरुरत है.

सिविल और केमिकल इंजीनियरिंग आदि में पर्यावरण जनित चिंताओं के कारण एनवायरमेंट इंजीनियरिंग में कई क्षेत्र विकसित हुए है. कभी इंजीनियरिंग के बाद एमबीए करना सोने पे सुहागा समझा जाता था, मगर अब तो इंजीनियरिंग मैंनेजमेंट जैसी नई शाखा का ही उदय हो चुका है.

सिविल इंजीनियरिंग सेक्टर में महानगरीय जरुरतों के मद्देनजर कुछ नये क्षेत्र भी सामने आए हैं. भूंकप की आशंकाओं के कारण भवन निर्माण में निश्चित मानक तय करने के अलावा प्रत्येक निर्माण की इजाजत स्ट्रक्चरल इंजीनियर से करवाने का कानून भ्जी प्रस्तावित है. फलतः विशेषज्ञों की मांग बढ़ेगी. एनवायरनमेंट इंजीनियरिंग में नए क्षेत्र आएंगे. इन क्षेत्रों में विशेषज्ञ लोगों की मांग निश्चित ही बनी रहेगी. रिमोट सेसिंग और बहुराष्ट्रीय इंजीनियरों की मांग में भी वृद्धि होगी.

दूरसंचार क्रांति ने तो इलेक्ट्रानिक्स टेलीकम्युनिकेशन, आईटी, इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल आदि क्षेत्रों के युवाओं के लिए कई रास्ते खोल दिये हैं. फिलहाल कंपनियां कई उद्देश्यों को ध्यान में रखकर काम कर रही हैं.

सरकार भी सूचना क्रांति का लाभ प्रत्येक वर्ग को पहुंचाने के लिए मीडिया लैब जैसी परियोजनाओं के माध्यम से सिंप्यूटर आदि सस्ते उपकरण निर्माण पर जोर दे रही है. इलेक्ट्रोनिक्स क्षेत्र में भारत में अब वीएलएसआई चिप डिजाइनिंग में भी अवसर बढ़े हैं. सिग्नल प्रोसेसिंग, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, फाइबर ऑप्टिक्स, इंटीग्रेटेउ सर्किट, क्वांटम इलेक्ट्रांनिक्स, इंडस्ट्रियल इलेक्ट्रानिक्स, साइबरनेटिक्स, सेंसर डेवलपिंग आदि जैसे विषय अब स्वयं में शाखा बनते जा रहे है. इध् ार सारे दूरसंचार क्षेत्र का भविष्य में डिजिटिलीकरण तय है. हर उपकरण को डिजिटल बनाने से लेकर सेटटॉप बॉक्स जैसे उपकरण बनाने और उकनी सेल सर्विस तक काफी रोजगार संभावनाएं है.

मैकेनिकल क्षेत्र में अब एडवांस रोबोटिक्स प्रोडक्शन व इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग, सिस्टम डिजाइन, कंट्रोल इंजीनियरिंग, बायो मैकेनिक्स, स्मार्ट मैटीरियल निर्माण आदि जैसे क्षेत्रों का विकास तो हो ही रहा है. अन्य क्षेत्रों से जुड़ाव का सर्वाधिक लाभ भी मैकेनिकल क्षेत्र के तहत नैनो टेक्नोलॉजी और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग नई तकनीकि है. नैनो टेक्नोजलॉजी के अंतर्गत सूक्ष्म गणना पर आधारित उपकरण बनाए जाते हैं. ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में और सर्विसिंग वर्कशॉप में आईटीआई व डिप्लोमा वालों के लिए भी अच्छी संभावनाएं है. वही बायों मेडिकल इंजीनियरिंग में भी काम बढ़ा है.

इलेक्ट्रिकल क्षेत्र में पावर, एनर्जी और कंट्रोल नामों से ही कई विशिष्ट कोर्स प्रारंभ हो चुके हैं. सुपरस्पेशलाइजेशन के अलावा मैटलैब सॉफ्टवेयर जैसी तकनीक सीखनी होगी.

पारंपरिक शाखाओं के इतर मसलन पब्लिशिंग, एनवायरमेंट, सोइल मैकेनिक्स, पेट्रोलॉजी, मेडिकल इंजीनियरिंग, एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, माइनिंग, टैक्सटाइल, मैटलर्जी, सिरेमिक, मैरीन, ऑटोमोबाइल, केमिकल, एयरोस्पेस, एयरोनाटिक्स सेफ्टी व फायर, जैनेटिक्स इंजीनियरिंग आदि पर ध् यान देना बेहतर साबित होगा. भारतीय सेना और रक्षा संस्थानों में भी पारंपरिक कार्यक्षेत्रों के अलावा गाइडेड मिसाइल, एयरक्राफ्ट आदि के निर्माण व संचालन में पहले से ज्यादा अवसर हैं.

yksxx/kksardoksudgik;sx/kk D;kcryk;saxsokseaftydkirk
डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'दोस्त'

जरा हंस दो मेरे भाय

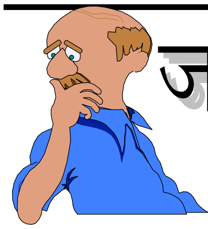

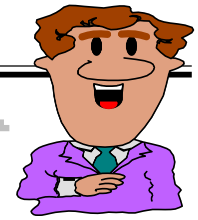

☠ मालिक (नौकर से)–उस भद्र महिला से इतनी बेरुखी से क्यों पेश आए कि बिना सामान लिए चली गई?
नौकर–साहब, बहुत अच्छा हुआ.
मालिक–क्यों?
नौकर–क्योंकि वह मेरी पत्नी थी.

☠ नीतू (अपनी सहेली से)–शादी से पहले तो वे मेरे घर के आसपास ही मडराते रहते थे और उन्हें अपने घर से दूर रखने के लिए मुझे कई जतन करने पड़ते थे. लेकिन अब उससे भी अधिक जतन उन्हें घर में रखने के लिए करने पड़ रहे है.

☠ सुषमा(अपनी सहेली रुचिका से)–क्या हुआ, तुम्हारी आंखें क्यों सूजी हुई हैं?
रुचिका–मेरे पति ने मेरी पिटाई कर दी.
सुषमा–लेकिन तुम्हारे पति तो बाहर गये थे?
रुचिका–मेरा भी यही खयाल था.

☠ जज(महिला से)–तुमने पति के सर पर कुरसी दे मारी और वह टूट गई.
महिला–जी हां, मगर मेरा यह इरादा नहीं था.
वकील–यानी तुम्हारी नीयत हमला करने की न थी.
महिला–जी नहीं, मेरी नीयत कुरसी तोड़ने की न थी.

☠ भिखारी–डॉक्टर साहब, मैं चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करवाना चाहता हुँ.
डॉक्टर–लेकिन तुम तो ऐसे ही खूबसूरत लग रहे हो.
भिखारी–इसीलिए तो कोई मुझे फूटी कोड़ी भी नहीं देता.

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

IVWMsUV~1 VsylZ] 'kxqupkSdchubZ HksaV

लगन कलेक्शन

THE REVISIT SHOP
Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

☠ पत्नी(पति से शिकायत करते हुए)–विवाह से पहले तुम मुझे ढ़ेरों उपहार दिया करते थे, अब क्यों नहीं देते?
पति–कभी तुमने सुना है कि मछली पकड़ने के बाद भी मछुआरे ने उसे चारा खिलाया हो?

☠ पति (पत्नी से)–क्यों जी, आज तुमने मेरा कोट झाड़ा क्यों नहीं?
पत्नी–झाड़ा तो था.क्यों?
पति–कुछ नहीं, भीतर की जेब में सौ–सौ के पांच नोट थे उनमें से एक भी गायब नहीं है.

☠ अशोक अपने मित्र समीर से मिलकर सहानुभुति प्रकट करने लगा.
समीर (विस्मित होकर)–मेरे साथ ऐसी कौन सी दुर्घटना हो गई तो तुम सहानुभूति प्रकट कर रहे हो?
अशोक–दुर्घटना हुई नहीं, होने वाली है. मेरी पत्नी पांच हजार की साड़ी पहन कर आज तुम्हारी पत्नी से मिलने वाली है.

इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के स्वरचित चुटकुलें भेज सकते है। अच्छे चुटकुलों को प्रकाशित कर पुरस्कृत भी किया जाएगा।

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 2)

आप अगर प्रकाशकों के शोषण से बचना चाहते हैं तो आप अपने प्रकाशक स्वयं बनें. हम कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित करने जा रहे हैं. इसका प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है. यह दूसरा भाग है. इसी प्रकार हम लेखों और कहॅानियों का संग्रह भी प्रकाशित करेंगे. कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

गुप्त रोग ताकत जवानी

गुप्त रोगों के शर्तिया ईलाज हेतु आज ही मिलें

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहाँ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

आखिर गुप्त रोग है क्या? जिसे घर वालों से गुप्त, पास–पड़ोस से गुप्त मित्रों से गुप्त, यहाँ तक कि पत्नी से भी गुप्त रखा जाये, क्या गुप्त रोग कोई समस्या है? क्या गुप्त रोग छुआछूत है? या फिर गुप्त रोग भूत–प्रेत है? अगर आप में से आपके जानने वालों में से परेशान है तो कृपया कोई भी ऐसा सुझाव न दें, जिससे रोगी घबराहट या परेशान होकर आजकल के लुभावनें प्रचारों जैसे गारण्टी और चन्द दिनों के अन्दर ठीक करने का दावा करने जैसे प्रचारों पर ध्यान देने लग जाये और बाद में अपना पूरा जीवन अंधेरे में बिताने पर मजबूर हो जायें। ऐसे रोगियों के लिए **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर का मशवरा है कि यदि आप नपुंसकता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, धातु रोग, पेशाब में जलन सुस्ती, कमद दर्द, पेट रोग, गर्मी सुजाक जैसे आदि रोगों का शिकार हो चुके हों और जगह–जगह इलाज के बाद भी सफलता न मिली हो तो आज ही **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** में आकर **डॉक्टर एम.आर.शाही** गवर्नमेंन्ट रजिस्टर्ड सेक्स स्पेशलिस्ट से मिलकर सरल एवं सफल इलाज करवाकर वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

जब घर बैठे हो खरीदारी

टेलीमार्केटिंग यानी घर बैठे खरीदारी करने का चलन अब तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है. टीवी पर या पत्र–पत्रिका में विज्ञापन में समान देखों, फोन करो और घर बैठे सामान पाओं.

हमारे यहां खरीदारी का मतलब ही होता है, पूरी तैयारी से बाजार जाना, दुकान–दुकान घूम कर चीजें देखना और पंसद आने पर खूब मोलभाव कर खरीदना. टेलीमार्केटिंग हमारे लिए एक नया प्रचलन था और इसे यहां अपना बाजार बनाने में काफी मशक्कत भी करनी पड़ी. शुरू–शुरू में केवल पांच प्रतिशत ग्राहक ही इसके जरिए खरीददारी कर रहे थे, लेकिन आज लगभग बीस प्रतिशत लोग इसे अपना रहे हैं. फिर यह सुविधा तो छोटे शहर में रहते हुए भी समान रुप से उठायी जा सकती है, बस, टीवी पर सामान देखिए, फोन पर ऑर्डर भेजिए, आपका सामान देश के किसी भी कोने में पहुंचा दिया जाएगा. इसके अलावा बिक्री के बाद भी सेवा सुविधा के अंतर्गत ग्राहकों को पूरा ध्यान रखा जाता है. पंद्रह–बीस दिन बाद फोन द्वारा उनसे फीडबैक लिया जाता है. यदि कोई परेशानी या असंतुष्टि हो, तो तुरंत ध्यान दिया जाता है.

टेलीशॉपिंग के अधिकांश ग्राहक मध्यम व उच्च मध्यम श्रेणी के हैं, जो नियमित रूप से केबिल व सेटेलाइट चैनल देखते हैं. इनमें पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या ज्यादा है. ज्यादातर 20 से 50 वर्ष की आयुवर्ग के पुरुष व महिला टेलीशॉपिग के ग्राहक हैं.

टेलीशॉपिंग की एक प्रमुख कंपनी एशियन स्काई शॉप अब तक तीन सौ से भी अधिक उत्पादों को पेश कर चुकी हैं. कंपनी के लगभग अस्सी प्रतिशत उत्पाद देसी होते हैं, तो लगभग बीस प्रतिशत सामान विदेशी होता है. उत्पादों में किचन एप्लाइन्सेज, फिटनेस व गेम्स आदि हैं. एशियन स्काई शॉप के विज्ञापन जीटीवी, जी सिनेमा, म्यूजिक एशिया चैनलों पर अनेक बार देखे जा सकते हैं. इन्हीं की भांति टीवीसी भी टीवी पर्दे पर आ गया है, हालांकि इनके पास अभी केवल कुछ ही उत्पाद हैं. टेलीब्रांड वर्ल्ड वाइड भी इसी कतार में शामिल हैं. इसके सभी उत्पाद विदेशी हैं.

यूनीलेजर का टेलीशांपिंग नेटवर्क भी पिछले पांच वर्षो से अपने लगभग अड़तीस उत्पादों की बिक्री के लिए देश भर में सत्तर–अस्सी फ्रेंचाइज आउटलेट तथा होम टीवी, सन टीवी, डीडी मेट्रो, गुर्जरी तथा दूरदर्शन मुंबई द्वारा दुकानदारी कर रहा है.

टेलीमार्केटिंग का भविष्य उज्जवल है और घर बैठे इस सुविधा का लाभ उठाना सुविधापूर्ण भी है, किंतु ऑर्डर देते समय कई बातों को समझना व ध्यान में रखना आवश्यक तथा लाभकरी होगा–

0 विज्ञापन देख कर तुरंत ऑर्डर ना करें– विज्ञापन को भलीभॉति देख कर, उसके विषय में पूरी जानकारी ध्यान से सुनकर, सोच–समझकर ही आर्डर करें.

0 जिन उत्पादों में मनीबैक गारंटी है, उन्हें ही मंगवाएं, ताकि पसंद न आने पर वापिस किया जा सके. बेहतर होगा कि अधिकृत दुकानों से देखभाल कर चीजें खरीदें.

0 कुछ उत्पादों के साथ टूट–फूट या दोषपूर्ण स्थिति की गांरटी रहती है. ऐसी स्थिति में तुरंत अधिकृत दुकानों को सूचित करें.

0 कोई भी वस्तु खरीदने से पहले उसकी कीमत, क्वालिटी आदि की अन्य ब्रांड से तुलना कर लें.

0 क्वालिटी की जानकारी टीवी पर दिखाए गए विज्ञापनों से प्राप्त नहीं की जा सकती है, अतः देखकर खरीदना बेहतर होगा. यदि आप ऐसी जगह हैं, जहां प्रदर्शन की सुविधा नहीं है, तो उत्पाद के साथ संलग्न सूचना को भलीभांति पढ़ कर इस्तेमाल करें. दुविधा की स्थिति में कंपनी से तुरंत संपर्क करें.

0 मनीबैंक गारंटी में डिलीवरी चार्ज वापिस नहीं मिलता है, अतः पसंद ना आने की स्थिति में यह पैसा आपकी जेब से ही जाएगा. ध्यान रहे, खरीदारी में बहुत समझदारी की जरूरत होती है.

0सिर्फ विज्ञापन से प्रभावित होकर चीजों का ऑर्डर ना करें, अपने लिए उसकी उपयोगिता भी देखें.

टेलीशॉपिंग के विज्ञापन और उनके ऑफर बहुत लुभावने लगते हैं, लेकिन कुछ भी आर्डर करने से पहले उसके बारे में पुरी जानकारी ले लें, ताकि आप खुद को ठगा हुआ महसूस ना करें.

आपके नुस्खें

0 मच्छर बहुत परेशान कर रहे हों, तो संतरे के सूखे छिलके जलाएं.

0 बिंदी नहीं चिपक रही हो, तो पेस्ट को गम के रूप में इस्तेमाल करें.

0 आग से जलने पर उस स्थान पर तिल पीस कर लगाएं, ठंडक पहुंचेगी.

0एक मूली रोजाना खाने से गैस तथा कब्ज से तुरंत आराम मिलता हैं.

0 यदि आप गंजेपन के शिकार हैं, तो आंवले के चूर्ण में नीबू का रस मिला कर बालों में लगाएं, गंजापन दूर होगा. साथ ही बाल काले व मुलायम हो जाएंगे.

औषधीय गुण भी हैं घरेलू सब्जियों में

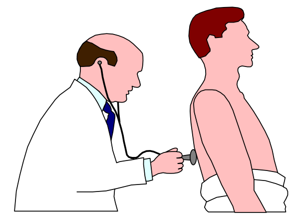

चिकित्सा की चाहे जो पद्धति हो, सभी औषधियाँ हर्बल और मिनरल अर्थात वनस्पति तथा खनिज से बनती है, जिनमें वनस्पति का योगदान सर्वाधिक हैं. आयुर्वेद, जिसका चलन प्रागैतिहासिक काल से भारत में रहा है और आज भी उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है, इसमें तीन चौथाई से अधिक औषधियाँ वनस्पतियों से ही बनाई जाती है. यहाँ हम उनमें कुछ वनस्पतियों की चर्चा करेंगे, जिनके संतुलित आहार से हमें औषधी की आवश्यकता नहीं रह जाती.

मिर्च—दैनिक आहार में मिर्च को शामिल करने से शरीर की सक्रियता तो बनी ही रहती है, इसके सेवन से व्यक्ति हैजा जैसी महामारी का ग्रास नहीं बन पाता. कुत्ते के काटने पर लाल मिर्च का पावडर घाव पर लगाने से जहर बेअसर हो जाता है. डिप्थीरिया और टॉन्सिल संबंधी रोगों में इससे लाभ होता है. किसी भी वजह से गला बैठ जाने या गला खराब होने पर एक चुटकी मिर्च का पावडर गर्म पानी में मिलाकर गरारा करने से लाभ होता है.

करेला— करेले की कड़वाहट में अनेक गुण भरे हैं. इसकी जड़, पत्ती तथा फल सभी उपयोगी हैं. घाव में इसकी पत्तियों का मरहम काम आता है, इसका नियमित सेवन गठिया, मधुमेह और बवासीर में अत्यन्त लाभकारी हैं. गठिया रोग में समुचित रक्तसंचार के माध्यम से, मधुमेह में शर्करा नियंत्रण से और बवासीर में पाचन तंत्र को व्यवस्थित कर करेला आरोग्य के साथ—साथ संतुलित स्वास्थ्य देता है.

मेथी— मेथी का उपयोग दाना, सब्जी दोनों रुपों में होता है. जोड़ो के दर्द, पेशाब की गड़बड़ी, कोष्ठबद्धता और अस्थि पीड़ा में भी रामवाण है. शरीर की बाहरी और भीतरी सूजन में इसके पत्तों को पीसकर बाँधने से शीघ्र लाभ होता है. इसकी पत्तियों की तासीर ठंडी होती है. भोजन में इसके पत्तों की सब्जी आमाशय की सक्रियता को बढ़ाती है और खून की वृद्धि करती है. मेथी दाने का चूर्ण सिर में लगाने से बालों का झड़ना रूक जाता है. **शेष अगले अंक में...**

स्वास्थ्य समस्याए

डॉ.श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः मैं 26 वर्षीय विवाहिता हूँ. 2 बच्चे है. प्रसूति के समय 2 टांके लगाए गए थे, जो बाद में खुल गए थे. वैसे तो कोई परेशानी नहीं है पर योनि के फैलने से अब हम पति पत्नी रतिक्रिया का सुखा नहीं उठा पाते. परेशान हूं कि ऐसे में स्थिति कैसे संभालूं?

उत्तरः प्रसव के बाद योनि में ढीलापन आ जाना आम बात है पर एक सरल से व्यायाम द्वारा योनि की मांसपेशियों को फिर से चुस्त बनाया जा सकता है. इसे किसी भी समय कहीं पर भी किया जा सकता है. इसे करने की विधि इस प्रकार हैः

श्रोणि की मांसपेशियों को उसी प्रकार सिकोड़े जैसे मूत्रत्याग की क्रिया को रोकना हो और 10 तक गिनने के बाद मांस पेशियों को ढीला छोड़ दें फिर से दोहराएं. पहले दिन 12 बार और बढ़ाते बढ़ाते सुबह शाम 24—24 बार इसे करने का नियम बना लें 4—6 हफ्तों में ही अपने भीतर भारी परिवर्तन महसूस करेंगी. योनि की मांसपेशियों फिर से कस जाएंगी और यौन संसर्ग का सुख दुगुना हो जाएगा. आने वाले सालों में गर्भाशय के नीचे की ओर खिसक आने की प्रवृत्ति पर भी रोक लग सकेगी.

प्रश्नः मुझे बेटी हुए 3 महीने ही हुए है. पति को कंडोम इस्तेमाल करना अच्छा नहीं लगता और बच्ची को दूध पिलाने के कारण मेरे लिए गर्भनिरोधक गोली लेना भी ठीक नहीं . क्या ऐसे में सहवास पूर्व योनि में डाली जानी वाली गोली का प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तरः सहवास पूर्व योनि में रखी जाने वाली शुक्राणुनाशक गोली जैसे 'टुडे' स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालती लेकिन समस्या यह है कि एक तो इसे सहवास से 10 मिनट पहले भीतर डालना पड़ता है, दूसरा कुछेक मामलों में यह पूरी सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाती. इसके फेल होने की दर 5प्रतिशत तक आंकी जा चुकी है.

सुरक्षा की दृष्टि से कापर टी लगवाना ज्यादा उपयोगी है. उसमें यह झंझट भी नहीं कि जब जब सहवास किया जाए. उसके पहले से योजना हो. पर कापर टी की भी अपनी सीमाएं है. यह जिसे माफिक आजाए उसी के लिए अच्छी है.

इस स्तंभ के लिए पाठक अपनी समस्याएं भेजते समय डाक्टरी परीक्षण, केस हिस्टरी व अन्य आवश्यक ब्योरा दें. समस्याओं के हल केवल पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे. पत्र इस पते पर भेजें: स्वास्थ्य समस्याएं, एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कहानी

आखिरी मुकाम

✍श्रीमती अनीता चौहान

विजय आकांक्षा के बालों को सहलाते हुए–"आकांक्षा आज एक बात अपने दिल की सच्चाई से बताओ"
"क्या ?"
"क्या तुम्हारे दिल ने मुझे कभी नहीं चाहा."
ये बातें सुनकर आकांक्षा की ऑखों में पानी भर आया. "विजय मेरे मन ने तो तुम्हें उस वक्त ही अपना मान लिया था जब शादी का नामों निशान तक नहीं था. विजय नजरों को दीदार चाहिए और दिल को तो सिर्फ प्यार चाहिए. लेकिन दुनिया और समाज को तो दहेज चाहिए, जाति चाहिए. इस समाज के लोग अपनी बेटियों को अपनी जाति से छोटी जाति में देना कभी मंजूर नहीं करते.

यह कहानी सत्य घटना पर आधारित है प्रसंग और पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं.

आज में जमाने में साज, सजावट कुछ ज्याद ही महत्वपूर्ण बन गई हैं. कार्यक्रम छोटा हो या बड़ा खातीरदारी तो तगड़ी ही होनी चाहिए. आखिर प्रतिष्ठा का सवाल है.

अग्रवाल जी के घर बड़े ठहाके लग रहे हैं. कुछ सोफे पर बैठे है. अग्रवाल जी बोतल बढ़ाते हैं.

"बलदेव भाई, लीजिए. वैसे तो हम शराब पीते नहीं है. लेकिन अगर इस खुशी के मौके पर आपकी इच्छा हुई तो अवश्य पूरी करेंगे."

"नहीं अग्रवाल. इसकी कोई जरुरत नहीं है."

"हम अपनी तरफ से तो कोई कमी छोड़गे नहीं, फिर भी अगर आपकी कोई इच्छा हो तो..."

"जब शादी तुम बढ़िया से करना चाहते हो तो किसी इच्छा का प्रश्न ही कहॉ उठता है."

"बेटी रोज–रोज तो विदा होती नहीं, आपका व बारात का हम तन–मन–धन से स्वागत करेंगे."

"अरे, हम भी बारात लाने में देर नहीं करेंगे."

कमरा फिर ठहाकों से गुंज उठता है. कुछ समय पश्चात मेहमान विदा हो जाते है. रात को अग्रवालजी बिस्तर पर लेटते हुएक बोलते है–"शोभाश आज एक चिंता तो दूर हुई."

"हॉ जी, शादी से ज्यादा मुश्किल तो रिस्ता ढूंढना होता है. वैसे लोग भी अच्छे लग रहे हैं."

दुसरे दिन सतीश विजय से बोलता है– "विजय सुनो तो......"

"बताओं जी जल्दी"

"तेरी उस आकांक्षा का रिस्ता तय हो गया है. पटने से पहले ही वह विदा हो जायेगी. यानि कि मैना तुम्हारी ले उड़ेगा कोई और"

"आकांक्षा की आकांक्षा कोई और करें, बिल्कुल नहीं. तू जा ये मामला तो मैं चुटकियों में हल कर लूंगा."

बलदेव के पास एक पत्र पहुॅचता है जिसमें यह शादी न करने का सुझाव होता है. बलदेव समझ जाता है कि यह काम किसी जलने वाले का हैं. लड़की तो देखी हुई और जानी हुई है. समय बीतते देर न लगी. आकांक्षा की खूबसूरती सिन्दूर से सज गयी. आकांक्षा दुल्हन बनकर किसी की पत्नी और किसी की बहू बन गयी. शुरु के कुछ दिन तो खुशी–खुशी बीत गये. बलदेव और उसकी पत्नी शादी में मिले धन से संतुष्ट नहीं थे. आकांक्षा की सास उसे छोटी–छोटी बातों पर ताने व गालिया देनी प्रारम्भ कर दी. यह धीरे–धीरे रोजमर्रा में शामिल हो गया. आकांक्षा मजबूर और अनपढ़ तो थी नहीं जो उसे किस्मत समझकर सहन करती वो दिन भी आ गया जिस दिन आकांक्षा को अपनी सॉस का सामना करना पड़ा. सॉस बहू दोनों बाजार जाने की तैयारी कर रही थी. तभी आकांक्षा बोली मॉ जी प्लीज आज तो कम से कम रिक्शा कर लेना हालत खराब हो जाती है पैदल चलते–चलते.

सॉस भौहें चढ़ाते हुए बोली–

"पैदल क्यों जायंगे, कार में जाना जो तेरे बाप ने भेजी है."

शादी से पहले तो लाखपति, शादी के बाद खाकपति.

आकांक्षा गुस्से में चीख पड़ती है–"मॉ जी, अगर पापा ने शादी में कार नहीं दी. इसका मतलब यह तो नहीं कि जो चाहे कह दें. जो भी उनसे बन सका दिये. आपसे कुछ लिये तो नहीं हैं ना. अरे खिलाया हीं हैं आपका कुछ खाया नहीं हैं. आप चाहे जितना मुझे गाली दे लों पर मेरे बाप को कभी गाली मत देना वरना......."

"वरना..... क्या करेगी. तू बोल! कुत्तीया, रन्डी, हमारा खाकर हमारी

ही छाती पर चढ़ेगी. एक बार नहीं हजार बार कहूँगी भिखारी, भिखारी. ...."

आकांक्षा की ऑखें क्रोध से भर आती है. जोर से चिल्लाकर कहती है–"चुप रहो!"

इतना सुनते ही आकांक्षा की सास उस पर टूट पड़ती है और मार–मार कर उसे अधमरा कर देती हैं. शाम को जब उसका पति घर आता है तो आकांक्षा बिस्तर पर ऑखें बन्द कर लेटी हुई होती है. आकांक्षा की चोटी पकड़ कर जोर से नीचे गिरा देता है. जूतें की ठोकरों से पीटते हुए कहता है–"सच्ची बात कड़वी लगती है तो क्यूँ नहीं अपने बाप से कहती और तूझे आशिकों की क्या कमी हैं. किसी से गाल खब्वा पड़ी रह किसी के साथ. मुझे कोई मतलब नहीं निकल यहॉ से. अगर फिर कभी अपनी सकल दिखाई तो फाड़ कर दो टुकड़े कर दूंगा."

खींचकर दरवाजे से नीचे ढकेल देता हैं. आज जिन शब्दों का प्रहार आकांक्षा पर हुआ उनकी शायद उसने कल्पना भी न की होगी."

किसी तरह उसी हालत में आकांक्षा अपने घर वापस आ गयी. उस हालत में जिस सक्श ने उसे देखा वो था विजय.

विजय की आंखों चौक पड़ी. जैसे उसने संसार का भयानक नजारा देख लिया हो. "नहीं!.." इतना कह कर विजय ने ऑखें बंद कर ली. कुछ पल बाद सामने कोई न था मानो कोई ख्वाब हो.

आकांक्षा की मां शोभा सोफे पर बैठी चावन चुन रही थी. तभी अचानक सामने औरत नजर आयी जिसके बाल बूरी तरह बिखरे हुए, साड़ी फटी हुई, माथे से खून टपकता हुआ. आकांक्षा के लड़खड़ाते कदम दरवाजे तक पहुॅच कर जोर से गिर पड़े. उसके गिरते ही उसकी मां चावल की थाली पटककर चिल्लाई–"आंकाक्षा....."

आकांक्षा का नाम कमरे में गुजते ही घर के सदस्य दौड़ पड़े. शोभा आकांक्षा को बाहों में भर कर फूट–फूट कर रोने लगती हैं. जिस बच्ची के जरा से रोने पर उसका सारा बदन चुम लिया करती थी. आज उसी के शरीर पर ऐसी कोई जगह बाकी नहीं जिसे छुआ जा सके. आकांक्षा को उसके घर वाले पलंग पर लिटा देते हैं. कुछ समय में ही अग्रवाल जी डॉक्टर को लेकर घर पहुॅचते हैं. डॉक्टर दवांइया देता है साथ ही कहता है कि मरीज को आराम की सख्त जरुरत है. समय बीतता गया आकांक्षा धीरे–धीरे ठीक हो गयी. तन के जख्म तो भर गये पर मन पर पड़े छाले तो टस से मस नहीं हुए. आकांक्षा को ऐसा लगने लगा जैसे उसका जीवन सिर्फ एक रद्दी पेपर बन गया हो. लेकिन विजय तो इस रद्दी पेपर को भी सीने से लगाने के लिए बेचैन हैं.

आकांक्षा सोफे पर बैठी हुई ऑसू बहा रही थी, तभी विजय आ जाता है. लेकिन आकांक्षा को उसके आने का आभास भी नहीं होता. विजय उसके करीब जाकर उसके ऑसू पोछते हुए कहता है–

"उनके गम में ऑख मेरी रोती है
ऐ दिल क्या प्रीत यहीं होती है.

आकांक्षा अतीत अगर दुख दायी हो तो उसे भुला देना ही अच्छा होता है. आकांक्षा मेरा जीवन कल भी तुम्हारे इन्तजार में था आज भी तुम्हारे इन्तजार में हैं और तुम्हारे बाहों में आने तक इन्तजार में ही रहेगा."

इन बातों को सुन कर आकांक्षा कहती है–

"हमने देखा है दुनिया को ऐसे
जैसे देखें है दीप की बाती
कैसे करलें यकी हम तुम पर, सभी..."

इतना कर अपने कमरें की ओर चली जाती है. लेकिन विजय भी इतनी आसानी से हार मानने वालों में से नहीं था. उसका प्रेम कम नहीं हुआ.

आकांक्षा अपनी पढ़ाई दुबारा प्रारम्भ कर दी. विजय रास्ते में मिलता जुलता रहता. एक बार दोस्तों के साथ आकांक्षा और विजय भी घूमने जाते है. अचानक गाड़ी खराब हो जाती है. काफी कोशिश करने के बाद भी गाड़ी ठीक नहीं होती और रात हो गयी. आकांक्षा को जंगल में डर लगने लगा. आकांक्षा ने विजय का हाथ पकड़ लिया. विजय को तो जैसे राहत मिल गयी.

"आकांक्षा, तुम्हें डर लग रहा है. आओं यहॉ बैठ जाते हैं."

विजय आकांक्षा का हाथ अपने हाथों में लिये बैठते हुए बोला–"आकांक्षा जिनके दिल एक दूसरे के करीब हो तो उन्हें दूर नहीं रहना चाहिए"

सुख और अपनेपन का अहसास के कारण आकांक्षा विजय के कांधे पर सर रख लेती है. विजय उसके बालों को सहलाते हुए बोलता है–

"आकांक्षा आज एक बात अपने दिल की सच्चाई से बताओ"

"क्या?"

"क्या तुम्हारे दिल ने मुझे कभी नहीं चाहा."

ये बातें सुनकर आकांक्षा की ऑखों में पानी भर आया.

"विजय मेरे मन ने तो तुम्हें उस वक्त ही अपना मान लिया था जब शादी का नामों निशान तक नहीं था. विजय नजरों को दीदार चाहिए और दिल को तो सिर्फ प्यार चाहिए. लेकिन दुनिया और समाज को तो दहेज चाहिए, जाति चाहिए. इस समाज के लोग अपनी बेटियों को अपनी जाति से छोटी जाति में देना कभी मंजूर नहीं करते."

शेष अगले अंक में

✍पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

धार्मिक स्थल पर जाने का अवसर मिलेगा. तारीख 15 व 16 को व्यर्थ की उलझनों से बचकर रहें.

वृश्चिकः जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें क्योंकि इस समय आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिशें हो रही हैं. मगर बृहस्पति की कृपा से आप शीघ्र ही संकटों से पार हो जाएंगे. तारीख 6,7,15,16,23,24 व 28 अशुभ हैं.

धनुः महीने के पूर्वार्द्ध में आर्थिक सुधार सामान्य रहेगा. परिवार में कोई मांगलिक समारोह होगा. धन लाभ तथा अन्न–वस्त्र आदि भौतिक संपदाओं की प्राप्ति होगी. तारीख 1,4,18 व 20 शुभ नहीं हैं.

मकरः व्यापारिक गति ठीक तरह चलेगी, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा. परिजनों से वादविवाद न करें. पत्नी से सकारात्मक सहयोग मिलेगा. तारीख 1,2,10,11,12,19,20,21 व 28 अशुभ हैं.

कुंभः धनाभाव के कारण मन अशांत रहेगा. कठिन परिश्रम का भी अल्प लाभ ही मिलेगा. कृपया हनुमत उपासना करें, लाभ मिलेगा. परदेश वास, नेत्रविकार से कष्ट मिल सकता है. पारिवारिक सुख–शांति बढ़ेगी. तारीख 15 व 18 नेष्ट हैं.

मीनः कई नई योजनाओं पर काम करेंगे, मगर इस दिशा में शीघ्र ही एक निर्णय ले लेना ठीक रहेगा. अपने से वरिष्ठों से मार्गदर्शन लें. स्वास्थ्य के प्रति भी सतर्क रहें. तारीख 28 से 30 तक जो भी करें, बार–बार सोचकर ही करें.

(ज्योतिष)

ज्योतिष क्या है?

✍अंजना अग्रवाल

नवभारती पब्लिक स्कूल, दारागंज, इलाहाबाद

ज्योतिष श्रृंखला प्रारम्भ करने के लिए आवश्यक है कि पहले हम ज्योतिष क्या है? उसका स्वरुप क्या है? इसके अन्तर्गत किन बातों का अध्ययन किया जाता है आदि बातों की सामान्य जानकारी प्राप्त कर लें.

शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिष चक्षुषी श्रोतमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पाद पद्महयं छन्द आद्य बुधैः।।

अर्थात जिस प्रकार कोई प्राणी सभी अंगो से युक्त होने पर भी नेत्रहीन है तो वह जीवन की सार्थकता को नहीं जान सकता. उसी प्रकार शिक्षा कल्प निरुक्त छन्द और व्याकरण शास्त्र का ज्ञाता होने पर ज्योतिष शास्त्र से अपरिचित विद्वान नेत्रहीन प्राणी की भांति वैदिक कार्यो में सर्वथा अन्धा रहता है.

ज्योतिष को अंग्रेजी में ऐस्ट्रोलॉजी कहते है. यह एस्टर और लोगुस शब्दों से मिलकर बना है. जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमशः नक्षत्र और कारण अथवा तर्क है. प्रारम्भ में इसका अर्थ व्यवहारिक खगोल विद्या से लिया जाता था.

आधुनिक काल में ज्योतिष के बारे में कहा गया है 'सूर्यादि ज्योतिषां ग्रहणां बोधक शास्त्रम् अर्थात वह ज्ञान जो ग्रहों ही स्थिति एवं उनके भ्रमण और काल एवं उनका हम सब पर पड़ने वाले प्रभाव वाले प्रभाव का ज्ञान करता है उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं.

सामान्य रुप से ज्योतिष शास्त्र वह विज्ञान है जिनके ग्रहों के नियमित रुप से बदलते रहने, व्यक्तियों राष्ट्रो को भाग्य एवं दुर्भाग्य जल–प्रलय, महामारी और अन्य पृथ्वी संवंधी सासांरिक मामले की जानकारी प्राप्त होती है

राशिफल माह जुलाई

मेषः स्वास्थ्य को लेकर अब चिंतित न हों, क्योंकि अब ठीक समय आ गया है जब आप अच्छे स्वास्थ्य के स्वामी बन जाएंगे. मास के आरंभ में ही अनचाही सफलता मिलेगी. सूर्यदेव को जल चढ़ाना जारी रखें.

वृषभः सफलता को लेकर कतई चिंता करने की जरुरत नहीं है. थोड़े से परिश्रम से आप काफी आगे बढ़ जाएंगे. मन को हल्का रखने के लिए ध्यान एवं उपासना का क्रम शुरु करें.

मिथुनः आप के कार्यो में निखार आने का समय आ गया है. खूब प्रसिद्धि मिलेगी. ध्यान करने में लापरवाही न करें, क्योंकि ध्यान से आपका अव्यवस्थित मन व्यवस्थित होने लगेगा.

कर्कः आपके लिए बृहस्पतिवार का दिन ठीक है, इस महीने में कोई विशेष कार्य करना हो तो आप इस दिन निर्णय ले सकते है. जीवन के विकास के लिए उचित समय यही हैं.

सिंहः आपने जो सोचा है, वह मिलेगा. पर इस महीने में कोई विशेष कार्य करना हो तो आप इस दिन निर्णय ले सकते हैं. जीवन के विकास के लिए उचित समय यही है.

कन्याःआर्थिक दृष्टि से संपन्न बनने के लिए आपको काफी

तुलाः उन्नति के द्वार खुलेंगे. मान–सम्मान में बृद्धि होगी. रोजी–रोजगार में लाभ होगा. परिवार में खुशी का माहौल बनेगा. किसी

आवश्यक सूचना :

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा। संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के. द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

फार्मः 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक का स्थान : 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
   क्या भारत का नागरिक हैः हां
   यदि विदेशी है तो मूल देश का नाम नहीं
   पता : 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
4. प्रकाशक का नाम : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
   क्या भारत का नागरिक है : हां
   यदि विदेशी है तो मूल देश नहीं
   व पता : 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
5. संपादक का नाम : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
   क्या भारत का नागरिक है : हां
   यदि विदेशी है तो मूल देश नहीं
   व पता : 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के 1प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवम् विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं.

दिनांकः 20 जून 2004

मात्रा 25/—पच्चीस रूपये में अपने लड़के/लड़की वैवाहिक विज्ञापन देकर शादी ढूढने की झंझट से मुक्त होइए

स्नेह मैरिज ब्यूरो

वर/वधू चाहिए

⊠अग्रवाल गोयल 22/5'–3'' गौरवर्ण, एम.ए.अध्ययनरत, निरंतर प्रथम, गृहकार्य दक्ष, सुंदर कन्या हेतु सेवारत/ उच्च व्यवसायी वर चाहिए. जन्म पत्री, बायोडाटा भेजे.

⊠गढ़वाली ब्राहमण 30/5'–2'' बी.एस.सी., अध्यापिका सुन्दर कन्या हेतु वर चाहिए.

⊠मंगल गोत्रा गुप्ता, 24/5'–2''/इण्टर, तलाकशुदा कन्या हेतु अविवाहित/तलाकशुदा (निःसंतान) सुयोग्य वर चाहिए. व्यवसायी या सरकारी सेवारत

⊠गोयल, अतिसुन्दर, गौरी, पतली,22/5'–7'', एम.एस.सी. सेवारत कन्या हेतु योग्य वर चाहिए.

⊠हिन्दू ब्राहमण, कद 5'3'', रंग गेंहुआ, ग्रजुएट, कम्प्यूटर डिप्लोमा, सिलाई, कढ़ाई पेंटिग में महारत हासिल कन्या हेतू सरयू पारीय वर सकुशल वर चाहिए. लिखेंः स्नेह मैरिज ब्यूरो

⊠हिन्दू मालवीय ब्राहमण, ग्रेजुएट,गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सजातीय पराश्रित वर चाहिए लिखेंः स्नेह मैरिज ब्यूरों

⊠हिन्दू, सरयूपारीय ब्राहमण, ग्रेजुएट अध्यनरत कन्या हेतु सजातीय सकुशल वर चाहिए लिखेंःस्नेह मैरिज ब्यूरो

वधू चाहिए

⊠बी.काम, पत्राकारिता में दक्ष, कान्य कुब्ज ब्राहमण लड़का हेतु सुशील, ग्रजुएट कन्या हेतु लिखेंःस्नेह मैरिज ब्यूरो

⊠पोस्टग्रेजुएट अध्ययनरत, सरयूपारिय दूबे, लड़के मां–बाप नहीं है. केवल दो बड़े भाई शादी शुदा. खेती बारी से सम्पन्न लड़के हेतु सजातीय वधू चाहिए. लिखेंः स्नेह मैरिज ब्यूरो

⊠मालवीय ब्राहमण,पोस्टग्रेजुएट मैथ, 5'6'',रंग गोरा, एकहरा बदन, लड़के हेतु सजातीय वधू चाहिए.

विस्तृत जानकारी के लिए लिखें :

स्नेह मैरिज ब्यूरो

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

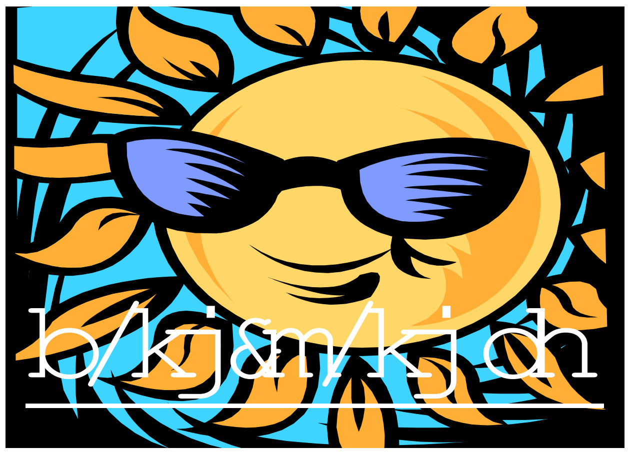
b/kj&m/kj dh

संस्थापित :1987 | उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त | ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

THI

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक / बालिकाओं)

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

स्थापित 1982 | मान्यता प्राप्त | रजिः 1030

किशोर गर्ल्स हाईस्कूल एवं कॉलेज

एवं fd'kksj dkWUosUV Ldwy

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

प्रवेश प्रारम्भ सत्र–2004–05

प्रबंधक
वी.एन. साहू

82 / 102, मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
कु0 सविता सिंह भदौरिया